विषय सूची।

भूमिका

जो लोग तीर्थयात्राके लिये चलते है उनमें कई लोग ऐसे भी होते है कि जिनको अपने जैन तीर्थस्थानोंके विषयमें पूरा परिचय भी नहीं होता है। इस कारण उन लोगोको किसी २ तीर्थस्थानपर तो दुवारा जाना आना पड़ता है. इससे उन विचारोंका समय और धन व्यर्थ ही नष्ट होता है; किस स्टेशनसे किस तीर्थस्थानपर जानेके लिये सुभीता होगा वा अमुक स्टेशनसे अमुक तीर्थपर पहुँचनेके लिये क्या सामग्री मिलती है, किस तीर्थस्थानका तारघर वा डाकखाना कहां है. इत्यादि साधारण वात भी मालूम न होनेसे यात्री व्यर्थ ही तकलीफ पाते है व उनको अपनी चिट्ठी समयपर नहीं मिलती है इन सब तकलीफोंको यथासाध्य दूर करनेके लिये यह पुस्तक वनाई गई है.

जैन तीर्थयात्रा, जैनतीर्थप्रदीपिका और तीर्थाटन नामकी दो तीन पुस्तकें इसी उद्देशसे अवतक प्रकाशित भी हो चुकी हैं, परन्तु उन पुस्तकोंमें भारतवर्षके सब तीर्थोंका मानचित्र (नकशा) नहीं है. इससे यात्रीको घरसे चलते समय यह नहीं मालूम पड़ता कि मुझे रास्तेमें कौनसे तीर्थ मिलेंगे तथा इस तीर्थ से अगाड़ी कौनसा तीर्थ मिलेगा, तथा उन पुस्तकोंका मूल्य भी कुछ ज्यादा होनेसे सर्व साधारणको उनसे जो लाभ होना चाहिये था,

वह न हुआ। इस लिये हमने सारे भारतवर्षके जैन तीर्थस्थानोंका तथा उन तीर्थस्थानोंपर जानेवाली रेलवे लाइनोंका नकशा भी छपवाया है, इससे उसको देखते ही सारे तीर्थस्थानोंका परिचय हो जायगा।

इस पुस्तकमें जिस तीर्थस्थानका विवरण दिया है उसमें पाठक शायद यह समझेंगे कि लेखक उन सब तीर्थोंपर स्वयं गया होगा पर यह बात ठीक नहीं है, हमको जिस २ तीर्थोंका दर्शन करनेका अवसर मिला है उस पर * यह चिन्ह किया है बाकी अन्य सब तीर्थोंका वृत्तांत उस प्रांतके निवासियोंसे तथा जिन्होंने उन तीर्थ स्थानोंकी यात्रा की है, उन लोगोंसे पूछकर लिखा है, इसी कारण इसमें कहीं २ पर ठीक भी न लिखा गया होगा, दूसरे आजकल ब्रिटिश राज्यमें रेलवे लाईन प्रतिदिन बढ़ रही है, इससे नवीन मार्ग भी खुलते जाते है; सम्भव है कि जिस रेलवे स्टेशनसे जानेका अब मार्ग है, वह आगे न रहे. इस कारण पाठक वर्गसे हमारा नम्र निवेदन है कि वह उस जगह पर उसको सुधारकर पढें तथा हमको कृपा करके सूचित करें जिससे हम द्वितीयावृत्तिमें ठीक कर देवें।

हमारी मातृ भाषा गुजराती है. हिन्दी भाषामें पुस्तक प्रगट करनेका हमको यह प्रथमही समय था. इस लिये भाषाकी कई एक अशुद्धियां थीं जिसको पंडित गोविन्दरायजी, विद्यार्थी स्याद्वाद महाविद्यालय काशीने सुधार दी है, जिससे मैं उनका चिर कृतज्ञ हूं।

निवेदक, डाह्याभाई शिवलाल.

तीर्थयात्राका असली फल

जो जितना अधिक ज्ञानी होता है वह उतनी ही सरल रीतिसे अपनी आवश्यकताओंको पूर्ण कर सुखी होता है। जब मनुष्य बाल्यावस्थामें रहता है तब उसको साधारणसे भी साधारण आवश्यकताओंको पूर्ण करनेमें बहुत तकलीफ उठानी पड़ती है, परन्तु जब वह प्रौढ़ हो जाता है तब उनही आवश्यकताओंको बड़ी सरल रीतिसे वह पूर्णकर देता है इन सबका कारण सोचनेपर यही निश्चित होता है कि ज्यों २ मनुष्यमें ज्ञानका विकास होता जाता है त्यों २ वह अपनी आवश्यकताओंको पहलेसे अधिक सरलतासे पूर्ण करनेमें क्षम होता जाता है। इस लिये जिस तरह बने उस तरह मनुष्यको अपना ज्ञान उत्तरोत्तर बढ़ाना चाहिये, यदि वह संसारमें सुखी होकर रहना चाहता है तो आज भारतवर्षकी जो हालत है जिसको देखकर भारतहितैषी दिन रात आंखोंसे आठ २ आंसू बहाते रहते हैं उसका मुख्य कारण यही है कि जबसे उसने विज्ञानसिद्धान्तसे मुख मोड़कर लकीरके फकीर का पथ पकड़ा है तबहीसे उसको इसके बदलेमें ऐसा प्रतिफल मिला है कि इसके गलेमें अनिश्चित अवधिके लिये गुलामी की अपवित्र जंजीर पड़गई। हमारे पूर्वज हमारे जैसे कूपमंडूक नहीं थे।

जो अपने गांवमें ही सड़ते रहे हों। उन्होंने जगतके उपकार के लिये सम्पूर्ण विश्वकी भूमि खूंद डाली थी। आज उन आर्योंकी कीर्तिको उनके जातीय तथा धार्मिक चिन्ह विदेशोंमे स्थित होकर विश्वके चारों खूटोंमें उनकी कीर्ति बतला रहे हैं। धन्य था उन आर्योंको जिनकी बदौलत यह देश सारे जगत्का गुरू कहलाया। वे हमारे पूर्वज ज्ञानोपार्जन करनेके लिये बड़ी २ यात्रायें किया करते थे और यात्राओंमें दूसरे देशोंका भी हाल हवाल देखते थे।

और अपने देशकी दूसरे देशसे तुलना करते थे। जो कुछ उनको विदेशोंमें अच्छा दीखता था उसको लाकर अपने भाइयोंको बतलाकर अपने देशको सौभाग्यशाली बनाते थे। अस्तु जो आदमी मूर्ख भी हो और यदि यात्रा करने चले तो वह भी अपनी यात्राकी बदौलत विद्वान्की तरह होशयार हो जाता है। बाहर जानेसे आदमी की आंखे खुल जाती हैं, तथा तब हीसे उसकी बुद्धि बढ़ने लगती है, और यदि विद्वान् यात्रा करें तो उससे उनको तो लाभ होता है पर और लोगोंको भी कई बातोंका लाभ होता है। सच पूछा जाय तो केवल शास्त्रोंपर भी मनुष्य तब तक अधूरा ही विद्वान् रहता है जब तक वह देश विदेशोंकी यात्रा न करे इस लिये पूरा विद्वान् बननेके लिये भी मनुष्यको आवश्यक है कि वह यात्रा करे। इनही बातोंको सोचकर हमारे पूर्वजोंने हमारे लिये शिक्षा दी कि "देशाटन पंडितमित्रताचे" इत्यादि अर्थात् देश विदेशोंमें घूमनेसे तथा पंडितके साथ मित्रता करनेसे बुद्धि दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है। इस लिये आवश्यक है कि मनुष्य अपने ज्ञान बर्द्धनार्थ यात्रा

करे, जैसा कि इस समयके विद्वान् देशाटनके लाभदायक उपदेश सुनाया करते हैं। सर्व भाइयोंका एक स्थानपर मिलना होता है अतएव अच्छी २ गूढ़ बातोंपर भी विचार किया जा सकता है। आशा है कि शिक्षाका प्रचार अधिक होनेसे देशाटनका शौक सर्वके हृदयमें स्थान पायगा जिससे तीर्थयात्रा और देशाटन दोनो कार्योंकी सिद्धि हो सकेगी।

यात्रियोंको ध्यानमें रखने योग्य सूचनाएं.

१. पाप तो किसी भी जगह अच्छा नहीं होता परंतुः—

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं. तीर्थक्षेत्रे विनश्यति।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं, वज्रलेपः प्रजायते॥

अर्थात् दूसरी जगह किया हुआ पाप तीर्थ स्थानमें तो छूट भी जाता है, परंतु तीर्थस्थानमें किया हुआ पाप वज्रका लेप हो जाता है इस लिये यात्रीको चाहिये जहा तक हो वहां तक पाप वृत्तिसे बचे.

२. परिणाम शुद्ध करनेकी और पाप निवारण करनेकी मनमें भावना धर यात्राको जाना चाहिये न कि योती मान बड़ाईके लिए. तथा धर्मध्यानमें विशेप समय न लगाकर लडुआ पुड़ी तथा गप्पाष्टकोंमें लगानेके लिये; क्योंकि ऐसा करनेसे तीर्थयात्राका असली उद्देश सिद्ध नहीं होगा.

३. जिस महाशयको तीर्थ वन्दना करनेकी शुभेच्छा उत्पन्न हो उसको चाहिये कि वह निज शक्त्यानुसार उन गरीब आदमियोंको भी जिनको तीर्थयात्रा करनेकी उत्कण्ठा हो साथ ले आकर अथवा भूखे प्यासेको भोजन वस्त्रादि देकर अपने द्रव्यका सदुपयोग करे.

४. जिस तीर्थपर जाना हो वहांका इतिहास तथा उसके महात्म्यका परिचय प्राप्त करना चाहिये; वह तीर्थस्थान क्योंकर पूज्य हुआ है. उसके द्वारा मानवजातिके क्या २ उपकार हुए हैं; इत्यादि बातें. ज़रा परिश्रमसे ढूंढ़ना चाहिये, नहीं तो तीर्थ करनेका पूरा २ फल नहीं मिलता है.

५. जिस तीर्थमें जिस समय जाना हो उस समय वहांपर जिन २ महात्माओंने अचल पद प्राप्त किया हो उन सबका जीवन चरित्र पढ़ना चाहिये, उनके गुणोंका चिंतवन करना चाहिये. उनकी आत्मासे तथा अपनी आत्मासे तुलना करना चाहिये. तथा हमारे वह क्योंकर पूज्य हुए है और अन्य लोगोंसे उनमें क्या क्या विलक्षणता थी इत्यादि बातोंका खूब छानबीन करे. सवेरे और शामको शास्त्रश्रवण या स्वाध्याय करे जिससे ज्ञानवृद्धि हो क्योंकि ज्ञान विना न किसीको सुख मिला है. जिनको उपयुक्त ज्ञान नहीं है वे पृथ्वीकेलिये भार है.

६. जिस तीर्थपर तुम गये हो वहां के यात्रियोंको आराम मिल-

नेमें किस वातकी त्रुटि है, धर्मशाला व मंदिरकी क्या व्यवस्था है, भण्डारमें यात्री जो रकम देते है वह सब कहा जाती है, उसका क्या उपयोग होता है, इन सब वातोंका निरीक्षण करके स्वतंत्रता पूर्वक सम्मतिप्रदर्शिका पुस्तकमें (विजीटर बुकमें) अपनी सम्मति लिखना चाहिये. अपनेसे जो त्रुटि दूर हो सकती हो उसको उदारतापूर्वक दूर करना चाहिये.

७. तीर्थके मैनेजरके प्रबंधमें जो त्रुटि मालूम हो वह त्रुटि मैनेजरको बता देनी चाहिये, जिससे वह उसको आगेके लिये सुधार देवे.

तीर्थके भंडारमें यथाशक्ति द्रव्य जमा कराना चाहिये; क्योंकि विना द्रव्यके मैनेजर यात्रियोंके आरामके लिये कैसे प्रबंध कर सकेगा. किसी २ भाई का यह विचार है, कि तीर्थस्थानोंमें द्रव्य देनेकी क्या आवश्यक्ता है, पर उनलोगोंका यह विचार गलत है, क्योंकि द्रव्यके विना किसी भी संस्थाका उचित प्रबध नहीं हो सकता फिर तीर्थकी संभाल रखनेके लिये तथा यात्रियोंको आराम देनेके लिये जो २ बंदोबस्तकी आवश्यकता है सो पाठकवर्ग स्वयं विचार सक्ते हैं, कि द्रव्यके विना इतना वडा कार्य मैनेजर तो क्या कोई भी आदमी नहीं कर सक्ता इसलिये प्रत्येक भाईको प्रत्येक तीर्थमें यथाशक्ति द्रव्यदान अवश्य प्रदान करना चाहिये.

८. तीर्थयात्राकी स्मृतिमें कोई न कोई ऐसी उत्तम प्रतिज्ञा अवश्य लेनी चाहिये जिससे देश व समाजकी उन्नतिके साथ ही साथ अपने आत्माकी उन्नति हो.

९. यदि तीर्थयात्रा करने पर भी आपकी आत्माकी उन्नति न हुई हो तो तीर्थ करनेका क्या फल है? भगवान तो घरपरभी थे, इसलिये क्रोध, मान, माया, लोभ, झूठ, कुशील सेवन, मादक वस्तु, अभक्ष्य भक्षण, अज्ञान, पक्षपात, और अन्य हिंसा का त्याग करना चाहिए तथा समताभाव रखना, दुःखित भूखे के प्रति दयाभाव प्रकट करना, मातृभूमिके सच्चे सुपूत बननेका उद्योग करना, साधुसंत, मुनि, आर्जिका, भट्टारक, यती, ब्रह्मचारी, क्षुल्लक और विद्वान् इनमेंसे जिसका समागम हो यथायोग्य वैय्यावृत्य व आदर सत्कार करना चाहिये क्योंकि धर्म इन्हीं लोगोंसे स्थिर है; परंतु वैसी अयोग्यभक्ति नहीं करना चाहिये, कि जैसी आज कल भारतके कई एक प्रान्तोंमें प्रचलित है, और इनसे किसी न किसी प्रकार की शिक्षा ग्रहण करना चाहिये. यह भी तीर्थयात्रा करनेका फल स्वरूप है.

१०. तीर्थोंपर हरएक देशके यात्री आते हैं उन सबसे मिलना चाहिये तथा अपनेसे उनका जो उपकार हो सक्ता हो उसको प्रसन्नतासे करना चाहिये. अपने आचार विचारोंमें जिन कारणोंसे दूसरोंसे मतभेद हो उन कारणोंको यथाशक्ति बदलकर आपसमें व्यवहार करना चाहिये. जिससे सब लोगोंमें मैत्रीभाव बढनेके साथही साथ निज कार्य क्षेत्रकी सीमा भी बढ़े.

११. जिस तीर्थस्थान व शहरमें जाना हो वहांके हाल चाल का विवरण अपने पास रखना चाहिये, शहरमें जहां २ जिनमंदिर

व चैत्यालय हो वहा जाकर उनका दर्शन करना चाहिये, उस शहरमें किस चीज़का व्यापार होता है वहाकी तिजारत क्योंकर वढी व घटी है. उसमें अधिकतर तिजारती कौन जाति है. अन्य शहरों की अपेक्षा उसमें क्या विशेपता है, उसमें किस धर्मकी प्रवलता है, तुम उससे क्या फायदा उठा सक्ते हो, नगर भरमें कहीं जैन पाठशाला है या नहीं, वहाके जैन बालकोंका कहापर पठन पाठन होता है इत्यादि वातोंका ज़रा गौरसे निरीक्षण करना चाहिये।

१२. यात्रामें नियमित भोजन करना चाहिये तथा वहुत खट्टे व व तीखे स्वादसे परहेज करना चाहिये. कोई तीर्थका पानी भारी हो तो उसको उवालकर उपयोगमें लाना चाहिये.

१३. दक्षिण भारतसे उत्तर भारतमें तथा वंगाल प्रान्तमें अधिक ठन्ड पड़ती है इसलिये यात्राके योग्य गरम कपड़े अपने साथ लेजाना चाहिये.

१४. रेलवे यात्रामें ज्यादा वजनकी चीजको अच्छी तरहसे वांध करके लगेज व ब्रेकमें दे देना चाहिये जिससे हर स्टेशनपर उसको उठानेकी तकलीफ न हो. तथा चोर व वदमाशोंसे हर समय सावधान रहना चाहिये. छोटे मोटे वच्चे जिन यात्रियोंके साथ हों उन लोगोंको रातके वदले दिनमें ही रेलकी यात्रा करनी चाहिये क्योंकि रातको रेलमें प्रायः ज्यादा भीड़ होती है, वच्चोंकी नींदमें वाधा पड़ती है, रातको सोते रहनेसे रेलमें चीज चोरीजाने का भय रहता है. दिनमें इन तकलीफोंसे वच सक्ते है व जिस

देशमें यात्रा करते है उसका प्राकृतिक दृश्य भी रेलगाड़ीसे नज़र आता है.

१९. जिस तीर्थपर गये हो वहांसे यदि आगेके तीर्थपर जानेके लिये पूरा २ हाल मालूम न हो तो वहांसे लौटे हुए यात्रियोंसे अथवा वहांके मैनेजरसे सारा हाल पूंछ लेना चाहिये. जिस तीर्थ-पर जो चीज़ देना चाहते हो उस चीज़को अपने हाथसे वहांकी भंडारवहीमें लिख दो और उसकी रसीद वहांके मैनेजर अथवा रो-कड़ियासे ले लो. गुप्त रीतिसे दान करनेकी चीज़ गुप्त भंडारमें ही छोड़ दो, न कि योंही जहां चाहो वहां रख दो. जो चीज़ गुप्त भंडारके बदले ऊपर ही रक्खी जाय उसकी इत्तिला वहॉके मैनेजर को दे दो नहीं तो छोटे २ नौकर उसको उड़ा लेते हैं और वह भंडार में जमा भी नहीं होने पाती. जैनियोंके तीर्थ अधिक तर पहा-ड़के ऊपर है इस लिये जाड़ेकी मौसम (आश्विनसे फाल्गुन) यात्राके लिए अच्छी गिनी जाती है. क्योंकि उन दिनोंमें ठंडीके सिवाय और तकलीक नहीं होती. गरमीके दिनोंमें पहाड़के ऊपर पत्थर तप्त हो जाते है, यात्रीको ज्यादा समय पहाड़पर ठहरकर स्थिरतापूर्वक धर्म ध्यान करनेका अवकाश नहीं मिलता व बाल बच्चोंको प्यास लग आती है इस लिये यात्रीको आश्विनसे फाल्गुण तक यात्रा करनेके वास्ते गमन करना चाहिये.

रेल्वेसम्बन्धी आवश्यक नियम।

१. हर एक स्टेशनकी घड़ीमें स्टेन्डर्ड टाइम रक्खा जाता है. जो कलकत्ता टाइमसे २४ मिनट पीछे व मद्रास टाइमसे ९ मिनट आगे. दिल्ली टाइमसे २२ मिनट आगरा टाइमसे १९ मिनट और बम्बई टाइमसे ३९ मिनट आगे रहता है।

२. रेलमें जानेवाले यात्रीको चाहिये कि वह गाडी आनेके समय से १५ मिनट पहले स्टेशनपर पहुंच जावे।

३. रेलमें चार दर्जे होते है फर्स्ट (१) सेकन्ड (२) इंटर (३) और थर्ड क्लास। इटर क्लासमें ड्योढ़ा किराया लगता है।

४. जिस दर्जेका टिकट यात्रीने लिया हो यदि उस दर्जेकी गाडीमें बैठनेको जगह न मिले तो वह स्टेशनमास्टर या गार्डको इत्तिला देकर उससे ऊपर या नीचेके दर्जेमें बैठ जावे, और उतरने पर ऊंचे दर्जेके दाम देने के लिये व नीचे दर्जे के दाम वापिस लेनेके लिये रेल्वे अफसरसे निवेदन करे।

५. जिस ट्रेनमें जानेके लिये टिकट खरीदा हो उसमे जगह न मिलनेके कारण या बीमारीके कारण अथवा और किसी कारणसे न जा सके तो उसकी खबर तुरन्त स्टेशनमास्टरको देना चाहिये। और यदि टिकटके दाम वापिस लेना हो तो तीन घंटेके भीतर स्टेशनमास्टरके पास उसकी रिपोर्ट करना चाहिये।

६. तीन वर्षतकके बालकका किराया रेलमें माफ है तथा तीनवर्षसे १२ वर्ष तकके बालकका किराया आधा है।

७. यात्रीको नीचे लिखे हुए लगेजसे अधिकका किराया देना पड़ता है। पहले दर्जेमें १॥ मन दूसरे दर्जेमें ३० सेर इंटरक्लास और थर्डक्लासमें १५ सेर तक बिना किराया दिये ले जा सकता है.

८. जिस यात्रीको, लम्बी यात्रा करना हो उसे थोड़ी थोड़ी दूरकी टिकट लेनेके वदले अधिक दूरकी टिकिट लेनेमें लाभ है। क्यों कि पहले सवा तीनसौ मीलका किराया ज्यादा लगता है फिर हर मीलपर आधा पाई किराया कम लगता है प्रत्येक रेलवेका इस विषयमें अलग २ कायदा है।

९. सौ मीलसे अधिक दूर जाने वाला यात्री सौमील जाकर उतरकर २४ घंटा तक विश्रामकर सकता है. और फिर उसी टिकटसे आगेके लिये वैठ सकता है। जैसे देहलीसे वम्बई ८६५ मीलकी दूरीपर है यदि यात्री वीचमें वडौदा, सूरत अहमदावाद ठहरना चाहे तौ दिल्लीसे वम्बई तककी एक टिकिट लेकर ठहर सकता है और इससे विरुद्ध थोड़ी दूरकी टिकट लेनेसे अधिक किराया देना पडता है।

१० जो लोग सारी गाड़ीको रिजर्व कराना चाहें उन्हें स्टेशन मास्टरको २४ या ४८ घंटे पहले सूचना देना चाहिये।

११ यदि किसी यात्रीसे रेलवे कर्मचारी (नौकर) अनुचित व्यवहार करें तो उस लाइन के ट्राफिक सुप्रि० के नाम उसकी रिपोर्ट करनी चाहिये।

भारतवर्षके डांक विभागके नियम।

१. जो चिट्ठी चारों तरफसे बंद होती है उसके पढनेका किसीको अधिकार नहीं है, ऐसी चिट्ठीका वजन १ तोला तक हो तो उसका महसूल आधा आना लगता है तथा उससे अधिक अर्थात् १० तोले तक एक आना लगता है। बैरग चिट्ठीका उससे दूना लगता है।

२. पोष्ट कार्ड एक पैसेमें मिलता है उसके एक तरफ तथा दूसरी तरफके आधे भागमें समाचार लिखना चाहिये। पता साफ लिखना चाहिये. इसी तरह सादे कार्ड को भी एक पैसेका टिकट लगाकर काममें ला सकते है।

३. बुक पैकिट—यह दोनों तरफसे खुला रहता है. इसमें छपी हुई पुस्तकें व छपनेके लिये हाथकी लिखी हुई कापियॉ वगैरह भेजी जाती है इसका महसूल १० तोले तक आध आना लगता है.

४. वानगीकी वस्तु भी १० तोले तक आधे आनामें जाती है और फिर हर दस तोले पर आधे आना ज्यादा होता जाता है.

५. पार्सल—४० तोले तकके वजनका =) आनेमें जाता है फिर हर ४० तोले या उसके हिस्सेपर =) आना अधिक होता जाता है, ये सब अनरजिष्टर्ड पार्सल कहलाते है जो राजिस्ट्री कराना चाहे वह =) का अधिक टिकट लगावे पार्सल कितने ही वजनका क्यों न हो। पारसल वेरंग कभी नहीं जाते।

६. वेल्यूपेवल (वी. पी.) पारसल, चिट्ठी, बुक पाकेट वगैरह

सव किये जा सकते है, महसूल भी ऊपर लिखा ही रहता है, केवल मनिआर्डरकी फीस अधिक देनी पड़ती है।

७. सव चीज़ोंकी रजिष्ट्री उसकी रवानगीके समय हो सकती है, रजिष्ट्रीकी फीस =) है.

८. किसी चीजको उचित रीतिसे पहुंचनेके लिये उसका वीमा हो सकता है ५०) रुपया तककी यदि चीज हो तो पार्सल वगैरहका महसूल देनेके वाद -) और अधिक देना पड़ता है, और १००) तककीका =) आना है फिर हर ५०) रुपया पर या उसके हिस्से पर -) आनाके हिसावसे वढ़ता जाता है, अॅनरजिष्टर्डका वीमा नहीं हो सकता है।

१०. मनीआर्डर——डॉक द्वारा मनीआर्डर भेजनेमें ५) रुपये पर -). १०) रुपयेपर =). १५) रुपयेपर ≡). २५) रुपयेपर ।) तथा हर पच्चीस रुपयेपर ।) वढ़ते चले जाते है। मनीआर्डरसे एक फार्मपर ६००) रुपया तक जा सकता है।

११. चिट्ठी तार और मनीआर्डरके भेजनेवालोंको चाहिये कि वे पानेवालेका पता व डांकघर स्पष्ट लिखें ताकि पहुँचनेमें विलम्ब न हो,

---

तार भेजनेके नियम।

१. तार दो तरहसे भेजा जाता है।

(क) एक्स प्रेस—इसमें १२ शब्द पता समेत जाते है १) रुपया लगता है, तथा प्रति शब्द दो आना अधिक लगता है।

(ख) ऑर्डिनरी—इसमें पते समेत १२ शब्द ।=) आनामें जाते हैं. आगे हर शब्दका आध आना बढ़ता जाता है ।

तार सब भाषामें दिया जा सकता है पर लिपी अंग्रेजी होना चाहिये ।

तारका मनीआर्डर।

१. तार द्वारा भी मनीआर्डर भेजा जा सकता है. इसके लिये साधारण मनीआर्डरके फारमको भरकर डाक घरमें (जहां तार आफिस हो) देना पड़ता है, इसमें महसूल वही मनीआर्डरके हिसाबसे लगता है, केवल ।।) आना अथवा १) तारका ज्यादा देना पड़ता है ।

२ यदि तार घर बंद है तो (अर्थात् उसका समय नहीं है) उसके खुलानेकी फीस १) और अधिक देना पड़ती है ।

भारतवर्षके तीर्थक्षेत्रोंकी सूची ।

(प्रान्तवार)

१. वङ्गाल और विहार प्रान्तमें ७ सिद्धक्षेत्र तथा ९ अतिशय क्षेत्र हैं ।

सिद्धक्षेत्र—सम्मेद शिखर, चम्पापुरी, पावापुरी मंदारगिरी, राजगृही, गुणावा, पटना ।

अतिशयक्षेत्र—खंडगिरी, उदयागिरी, कुंडलपुर मदलीपुर (कुलुहा पहाड़) मिथिलापुरी ।

२ उत्तर भारत और पूर्व भारतमें सिद्धक्षेत्र दो तथा अतिशय क्षेत्र १४ है ।

सिद्ध क्षेत्र—मथुरा, कैलाशगिरी (अगम्य है)

अतिशय क्षेत्र—अयोध्या, अलाहाबाद, अहिक्षित काकन्दी (किष्कंधापुरी) कौशाम्बी (कुसुमपुर) कंपिला, चन्द्रपुरी, सिहपुरी, बनारस, बटेश्वर, फिरोजाबाद, रत्नपुरी श्रावस्तीनगरी और हस्तनापुर (इन्द्र प्रस्थ) है ।

३ राजपूताना मेवाड़ और मालवेमें सिद्धक्षेत्र दो और अतिशय क्षेत्र १० है ।

सिद्धक्षेत्र—बड़वानी और सिद्धवरकूट है ।

अतिशय क्षेत्र—अजमेर, केशरियाजी, चमत्कारजी (सवाई माधोपुर) चान्दनगांव, चूलेश्वर, जयपुर, तालनपुर, बनेड़ा, मकशीपार्श्वनाथ, शातिनाथका मंदिर (झालरापाटन).

४. गुजरात और काठियावाड़ (सौराष्ट्र) में सिद्धक्षेत्र ४ और अतिशय क्षेत्र ४ है ।

सिद्धक्षेत्र—गिरनार,तारंगा, पावागढ, शत्रुंजय(पालीताना) है।

अतिशयक्षेत्र—अभीझरा पार्श्वनाथ, (वडाली) आबूजी, महुआ (विघ्नहर पार्श्वनाथ) तथा सजोत है ।

५. दक्षिण प्रान्त और मैसूर प्रान्तमें सिद्धक्षेत्र १ और अतिशयक्षेत्र १४ है।

सिद्धक्षेत्र—कुंथलगिरी.

अतिशयक्षेत्र—इलोरा. कचनेरा–पार्श्वनाथ, कुन्डल, कुम्भोज कारकल, जैनबद्री, दहीगाव, मूडबद्री, वेणूपुर, वरान्द, स्तवनिधी, शोलापुर, श्रवणबेलगोला (श्वेत सरोवर) हूमसके पद्मावती।

६. वरार (विदर्भ) और मध्यभारतमें सिद्धक्षेत्र १ और अतिशयक्षेत्र ४ है।

सिद्धक्षेत्र—मुक्तागिरी।

अतिशय क्षेत्र—अंतरीक्ष पार्श्वनाथ (शिरपुर) कारंजा, भातकुली, रामटेक।

७. बुन्देलखन्डमें सिद्धक्षेत्र ३ और अतिशयक्षेत्र ५ है।

सिद्धक्षेत्र—द्रोणागिरी, नैनागिरी, सोनागिरी.

अतिशय क्षेत्र—कुंडलपुर, खजराहा, ग्वालियर, थोवनजा और पपोराजी।

८. बम्बई प्रान्तमें सिद्धक्षेत्र २ है—गजपंथाजी और मागीतुंगी।

नोट—ऊपर लिखे हुए तीर्थोंसे और भी तीर्थ ऐसे हैं जो अपने २ जिलोंमे प्रसिद्ध हैं बाहर उनकी बहुत कम प्रसिद्धि है, इसी कारण उन तर्थोंका हाल लेखकको पूरा न मिलनेसे वे यहांपर नहीं लिखे गये, जिन महाशयोंको उनकी यात्रा करना होवे उस जिलेके निवासियोंसे उसका हाल पूंछ लेवें।

तीर्थोंकी

नंबर	तीर्थका नाम.	पूजनीक होनेका कारण.	किस प्रान्तमें.	कौन स्टेशनसे जाना होता है.	रेलवेका नाम.
१	अजमेर*	समोशरण वा अयोध्याकी रचना	राजपूताना	अजमेर	B. B & C. I. Ry.
२	अमीझरा पार्श्वनाथ	पार्श्वनाथ स्वामीका अतिशय क्षेत्र	गुजरात	वड़ाली	B. B. & C. I. Ry.
३	अयोध्या	तीर्थंकरोंकी जन्मभूमि	उत्तरहिन्दुस्थान	अयोध्या	O. R. Ry.
४	अलाहाबाद* (प्रयाग)	आदिनाथका दीक्षा कल्याणक, प्रयाग वड़के नीचे।	,,	अलाहाबाद	E. I. Ry.
५	अहिक्षितजी	श्रीपार्श्वनाथको कमठद्वारा उपसर्ग किया हुआ स्थान।	,,	आंनला Aonla	O. R. Ry.
६	अंतरीक्ष पार्श्वनाथ	पार्श्वनाथ स्वामीका अतिशय क्षेत्र	वराड़	अकोला मुर्तिजापुर	G.I.P.Ry.
७	आवूजी*	मशहूर मंदिर	गुजरात	आवूरोड	B. B. & C I. Ry.
८	आरा*	३१ मंदिर	बंगाल	आरा	E. I Ry.
९	इलोरा	पहाड़ोंमें पुरानी गुफाएं।	हैदराबाद (दक्षिण)	दौलताबाद	Nizames State Ry.
१०	उदयगिरी	,,	उड़ीसा	भुवनेश्वर	B N. Ry.
११	कचनेरा पार्श्वनाथ	पार्श्वनाथ स्वामीका अतिशय क्षेत्र	दक्षिण हैदराबाद	औरंगाबाद	N. S. Ry.
१२	काकंदी उर्फ किष्किधापुरी	पुष्पदंत स्वामीका जन्म स्थान	पूर्व हिन्दुस्थान	नौनखार	B. N W. Ry.
१३	कारकल	गोमटेश्वरकी मूर्ति	दक्षिण कनेरा	मूड़ विदरी	S. M. Ry.
१४	कारंजा	२०० चैत्यालय	वराड.	अकोला या मुर्तिजापुर	G. I. P. Ry.

अनुक्रमणिका.

फासला मील स्टेशनसे.	तीर्थपर जाने के लिये स्टेशनसे क्या साधन मिलता है.	खास मेला होनेकी मिती अगर हो तो.	पोस्ट आफिस.	तार घर.
..	... ..	... ...	अजमेर Ajmer	अजमेर
...	... ...	... ...	वडाली Vadali	वडाली
.	... ..	... ...	अयोध्या Ajodhya	अयोध्यां Ayodhya
..	... ...	. ...	अलाहाबाद Allahabad	अलाहाबाद
६	बैलगाड़ी	चैत्रवदी ८ से १२ तक	मु० रामनगर Via-P. Aonla	आनला
१९	,,	कार्तिक सुदी १५	सिरपुर Sirpur	बासीम Basim
१७	घोड़ा गाड़ी व बैलगाड़ी	... ...	मु० दिलवाडा पोस्ट आबूAbu	आबू
..	... ...	... ...	आरा Arrah	आरा
१०	बैलगाड़ी वा तांगा	... ...	...	. .
४	बैलगाड़ी	(जिला गंजाम)	उदयगिरी (जिला गंजाम) Udayagiri	उदयगिरी
२०	,,	... ...	.. .	... ...
३	बैलगाड़ी मजदूर	... ...	... .	.. .
१०	बैलगाड़ी	माघ वा फागुनमें	कारकल Karkal (South Kanara)	मगलोर Mangalore
२०	,,	... ...	कारंजा Karanja	कारंजा

१५	कुंडलपुर (दमोह)	पर्वतपर ५२ मंदिर (अर्ध चक्राकार)	बुंदेलखंड	दमोह	,,
१६	कुंडलपुर* (विहार)	महावीर स्वामीका जन्म स्थान	विहार	वड़गांव रोड	B. B. L. Ry.
१७	कुंडल क्षेत्र	अतिशयक्षेत्र श्री कलिकुंड पार्श्वनाथका	दक्षिण	कुंडल रोड	S. M. Ry.
१८	कुंभोज	चंद्रनाथस्वामीका मंदिर	दक्षिण	हाथकलंगडे	S. M. Ry.
१९	कुंथलगिरी	कुलभूषण, देश भूषण मुनियोंका मोक्ष स्थान	दक्षिण	बारसी टाऊन	G. I. P. Ry.
२०	कौशंबी	पद्मप्रभुके चार कल्याणक	उत्तर हिन्दुस्थान	भरवारी	G. I. P. Ry.
२१	कंपिला	विमलनाथके चार कल्याणक	,,	कायमगंज	,,
२२	केशरियाजी*	ऋषभदेवजी का अतिशय क्षेत्र	मेवाड़	उदयपुर	B. B. C. I. Ry.
२३	कैलास	आदिनाथ स्वामी की निर्वाण भूमि	हिमालय	रास्ता नहीं है	
२४	खजराहा	२१ प्राचीन मंदिर	बुंदेलखंड	दमोह सतना	G. I. P. Ry.
२५	खडगिरी*	प्राचीन मंदिर वा गुफाएं	उड़ीसा	भुवनेश्वर	B. N. Ry.
२६	गजपंथा*	सात बलभद्र वा आठ क्रोड़मुनियोंका मोक्षस्थान	बंबई	नाशिक	G. I. P. Ry.
२७	ग्वालियर (लश्कर)	२० पुराने मंदिर	बुंदेलखंड	ग्वालियर	I. M. Ry.
२८	गिरनार*	नेमनाथ स्वामी वा ७२ क्रोड़मुनियोंका मोक्षस्थान	काठियावाड़	जूनागढ़	C. G. I. P. Ry.

२१	बैलगाड़ी वा तांगा	चैत्र वदी ३० से चैत्र सुदी १५ तक	पटेरा Patera	.. ..
१	बैलगाड़ी वा मजुर	. ..	मीरचाईगंज Mirchaiganj	बिहार Bihar
२	बैलगाड़ी	.. ...	कुंडल Kundal	कुंडलरोड Kundal Raod
...	,,	पौष वदी १५	कुंभोज Kumbhoj	हाथ कालगडा Hat Kalnagle
१८	बैलगाड़ी	मगसर सुदी १५	Via Pipalgaon Post Bhom Dt-Sholapur	... .
३२	बैलगाड़ी तांगा	. ...	पाचिम शरीरा Pachimsarira Dt Allahabad	... ..
६	,,	. ...	.	... . .
५०	बैलगाड़ी तांगा	चैत्र वदी ९ से	ऋषभदेव Rakabdeo	खेरवाडा Kherwara
में	अगम्य	है.	.	... ...
६७	बैलगाड़ी	फागुण सुदी १२	राजनगर Rajnagar Dt. Chhatarpur	... ...
४	,,	. . . .	भुवनेश्वर	. . ..
८	बैलगाड़ी तांगा	माघ सुदी १३	मु० मशरूल नाशिक (Nasik)	नाशिक Nasik
...	...	... ...	ग्वालियर Gwalior	ग्वालियर
...	...	... ...	जूनागढ़ Junagarh	जूनागढ़

२९	गुणावा*	गौतमस्वामीकी निर्वाण भूमि	विहार	नवादा	G.I.P.Ry.
३०	गोमदृस्वामी उर्फ जैनवद्री	वाहुबल स्वामीकी मूर्ति ५२ गजऊंची	मैसूर	आरसीकेरी टीपटुरवा मेहेसूर	S. M. Ry.
३१	चन्द्रपुरी*	चंद्रप्रभुका जन्म स्थान	पूर्व हिन्दु-स्थान	बनारस	O. R. Ry.
३२/१	चम्पापुरी*	बांसपूज्य स्वामीके पांचो कल्याणक	विहार	नाथनगर	E. I. Ry.
३२/२	चमत्कारजी	आदिनाथ स्वामीकी स्फटिकमणिकी चमतकारिक प्रतिमा	राजपूताना	सवाई माधोपुर	B.B. & C. I. Ry.
३३	चांदन गांव	महावीर स्वामीका अतिशय क्षेत्र	मारवाड	पाटोडा महावीररोड	B.B. & C. I. Ry.
३४	चूलेश्वर	पार्श्वनाथ का अतिशय क्षेत्र	मेवाड़	भीलवाडा	R. M. Ry.
३५	जयपुर*	२०० मंदिर	ढूंढार	जयपुर	B.B. & C. I. Ry.
३६	तारंगा*	बरदत्तादि ३½ क्रोड मुनियोंका मोक्ष स्थान	गुजरात	तारंगाहिल	,,
३७	तालनपुर*	मल्लनाथका अतिशय क्षेत्र	मालवा	मह्र	,,
३८	थोवनजी	२४ प्राचीन मंदिर	बुंदेलखंड	ललितपुर	I. M. Ry.
३९	दहीगांव	महावीर स्वामीका अतिशय क्षेत्र	दाक्षिण	दिक्षाल	G I. P. Ry.
४०	द्रोणागिर	गुरुदत्तादि मुनियोंका मोक्ष स्थान	बुंदेलखंड	सागर	,,
४१	नैनागिर उर्फ रेसंदगिरी*	वरदत्तादि मुनियोंका मोक्षस्थान	बुंदेलखंड	सागर वा गनेशगंज	G. I. P. Ry.

१	बैलगाड़ी	.. ..	नवादा Nawadah	नवादा
३४	,,	तीर्थंकरोंके जन्म दिवसपर चैत्र वदी ७सेचै०सु०५ तक	श्रवणबेलगुल Shravan belgola (Dt Hassan)	चनारया पट्टन Channaraya Patna
११	तांगा	... ...	बनारस Benares	बनारस
½	पैदल बैलगाड़ी	भादों सुदी ११से भादोंसुदी १५तक	चम्पानगर Champanagar	चम्पानगर
१½	पैदल बैल-गाड़ी	चैत्र सुदी १५	*	Sawai Madhopur.
३	बैलगाड़ी	चैत्र सुदी १५	*	*
३०	बैलगाडी ऊंटगाड़ी	पूस सुदी ९से१० तक	भीलवाड़ा Bhilvara	१
...	..	... ...	जयपुर	जयपुर Jaipur
३	मजूर घोड़ा	कार्तिक सुदी १५ चैत्र सुदी १५	सतलासना Sat-lasna,Dt.Ma-hikantha	तारंगाहील
८०	बैलगाड़ी तांगा	... ..	कुकसी Kuksi	कुकसी
३३	बैलगाड़ी		चदेरी (जिला-धार)	
२२	,,	... ...	नाते पुते Nateputo	बारामती Baramati
४०	,,	चैत्र सुदी८से १४	मु० सैंदप्पा Pt. Gulganj (गुलगंज) Dt. Bijawar	सागर Saugor
३०	...	अगहन सुदी१०से १५ तक	पो० बंडा जिला सागर	सागर

४२	पटना*	सुदर्शन सेठकी निर्वाण भूमि	विहार	पटणा वा गुलजारवाग	E. I. Ry.
४३	पावापुरी*	महावीर स्वामीकी निर्वाण भूमि	,,	विहार वा नवादा	B. B. L. Ry.
४४	पपोराजी	७० मंदिर	बुदेलखंड	ललितपुरसे महरौनी होकर जाना चाहिए	I. M. Ry.
४५	पावागढ़*	लव कुश और पांच क्रोड़ मुनियोंका मोक्ष-स्थान	गुजरात	पावागढ़ हिल	B. B. C. I. Ry.
४६	फीरोजावाद	हीरेकी प्रतिमा	उत्तर हिंदुस्थान	फीरोजावाद	G. I. P. Ry.
४७	वटेश्वर	नेमनाथ स्वामीका जन्म स्थान	,,	{ सिकोहावाद फीरोजावाद	,,
४८	वनारस*	सुपार्श्वनाथ वा पार्श्वनाथकी जन्मभूमि	,,	वनारस (काशी)	O. R. Ry.
४९	वनेड़ा*	मनोज्ञ मंदिर	मालवा	इंदोर अजमोह	R. M. Ry.
५०	भद्दिलपुर उर्फ कुलुहापहाड़*	शीतलनाथकी जन्म भूमि	विहार	गयाजी	E. I. Ry.
५१	भातकुली	अतिशय क्षेत्र आदिनाथका	वराड़	अमरावती	G. I. P. Ry.
५२	मथुरा(चौराशी) ~	अंतिम केवली जंबू स्वामीकी निर्वाणभूमि	उत्तर हिन्दुस्थान	मथुरा	B.B. & C. I Ry.
५३	महुआ (विघ्नहर पार्श्वनाथ)	पार्श्वनाथका अतिशय क्षेत्र	गुजरात	वारडोली	,,
५४	मकसी पार्श्वनाथ*	,,	मालवा	मकसी	G. I. P. Ry.
५५	मिथिलापुरी	सुमति व मल्लि वा नमिनाथकी जन्मभूमि	विहार	सीतामढ़ी	B. N. W. Ry.
५६	मुक्तागिरी	८ क्रोड मुनियोंका मोक्ष स्थान	वरार	अमरावती	G. I. P. Ry.

..	...	पूस मासमें	पटणा Patna City	पटना
७	बैलगाड़ी	दिवाली पर	गिरीयेक Giriak	Bihar
१५	तांगा	महावीर निर्वाण	Dt Patna	बिहार
३५	बैलगाड़ी	चैत्रवदीमें	टीकमगढ़	
..		माघ सुदी १३	चापानेर सिटी Champaner City	चापानेर सिटी
*	*	*	फीरोजाबाद Firojabad	फीरोजाबाद
१४	बैलगाड़ी	. .	बटेसर Batesar	सिकोहाबाद
२८	इक्का गाड़ी			
...	...	. ...	बनारस Benares	बनारस
१८	बैलगाड़ी	चैत्र सुदी ११ से	पो. देपालपुर	Ajnod
१०	,,	चैत्र सुदी १५ तक	Dt Indore	... ...
४०	बैलगाड़ी	.. .	पोष्ट जोरी (Jori) जि. हजारीबाग	... ..
१०	बैलगाडी तांगा	मगसर वदी ५	पो. भातकुली P Bhatkuli जिला-अमरावती	अमरावती
३	इक्का तांगा	.	मथुरा Muttra	मथुरा
८	बैलगाड़ी	.. ..	महुवा Mahuva	वारडोली
१	बैलगाड़ी	फागुन सुदी १५	मकसी Maksi	मकसी
...	..	... ...	... ...	
४०	बैलगाड़ी वा तांगा	यहां केशरकी वर्षा अधिकतर है का.सु १४	कारजगांव karajgaon	इलिचपुर Ellichapur

५७	माणिक स्वामी	आदिनाथका अति शय क्षेत्र	हैदराबाद दक्षिण	अलवल	N. S Ry.
५८	मूड़बद्री	सिद्धांत दर्शन वा हीरे पन्नेकी प्रतिमा	दक्षिण सा· उथ कनेडा	मगलोर	S M. Ry.
५९	मंदारगिर*	वांसपूज्य स्वामी ·ा निर्वाण स्थान	विहार	मदारहिल	E. I. Ry.
६०	मागीतुंगी*	राम, हनु, सुग्रीव वा ९९ करोड़ मुनियोंका मोक्षस्थान	बबई	लासनगाव चिंचपाड़ा	G I. P Ry.
६१	रत्नपुरी	धर्मनाथके दो कल्याणक	उत्तर हिंदुस्थान	सोहवल	O. R. Ry.
६२	राजगृही*	मुनिसुव्रत स्वामीका जन्मस्थान वा महावीर स्वामीका समोशरण आया	विहार	राजगिरी	B B L . Ry.
६३	रामटेक*	शातिनाथका अतिशय क्षेत्र	मध्य हिन्दु.	रामटेक	B. N Ry.
६४	वरांग	नेमनाथका अति शय क्षेत्र	दक्षिण	शिमोगा कारकल	S. M Ry.
६५	वड़वानी उर्फ चूलगिरि*	इंद्रजीत व कुंभकरणका मोक्षस्थान (वावनगजा)	माल्वा	महू	R M Ry.
६६	सजोद	शीतलनाथका अतिशय क्षेत्र	गुजरात	अंकलेश्वर	B.B.& C. I Ry.
६७	स्तवनिधि*	भैरवका अति० क्षेत्र	दक्षिण	कोल्हापुर वा चिकोड़ी	S. M. Ry.
६८	सम्मेदशिखर*	वीस तीर्थंकरोंका मोक्षस्थान व अनंतानंत मुनियोंका मोक्षस्थान	विहार	गिरीडी ईसरी	E. I. Ry.
६९	श्रावस्तीनगरी	संभवनाथकी जन्म भूमि	उ. हिंदु०	बलरामपुर	B. N. Ry.
७०	सिद्धवरकूट*	दो चक्री वा दश काम कुमारका निर्वाणस्थान	मालवा	मोरटक्का	R M. Ry.

४	... ...	... ..	... ..	...
२२	बैलगाड़ी	चैत्रसुदी १ से चैत्रसुदी १५ तक	मूड़वद्री Moodbadri	मगलोर Manglor
२	पैदल मजदूर	... ...	बौंसी Baunsi	मदारहिल
५४ ४४	बैलगाड़ी तांगा	कार्तिकसुदी १५	मुलेर Mulher जिला नाशक	जायखेड़ा
३	... ...	.. ...	...	... ..
...	... ..	.. .	राजगिर Rajgir	सिलाव Silao
..	... ...	कार्तिकसुदी १५	रामटेक Ramtek	रामटेक
१५	... ...	पूसमें	हेरी आडका Heriadka (जि सा. कानरा)	उड़ीपो Udipo
८०	घोड़ागाड़ी वा बैलगाड़ी	पूस सुदी ८ से पूस सुदी १५ तक	बड़वानी Barwani	बड़वानी
६	बैलगाड़ी घोड़ागाडी	फागुन वदी १४	सजोद Sajod	अकलेश्वर
२८	बैलगाड़ी	पूस सुदी १४	निपानी Nipani	निपानी
१८ १३	बैलगाड़ी वा ठेला गाड़ी	माघ सुदी ५	मु० मधुवन पारसनाथ Parasnath	गिरीडी Giridih
१०	बैलगाड़ी	. ...	... ...	... ...
७	बैलगाड़ी	माहु सुदी ५ से १५ तक	मांधाता ओंकारजी Mandhata onkarji	बड़वाहा Barwaha

७१	सिंहपुरी*	श्रीयांसनाथकी जन्म-भूमि	पूर्व हिन्दु.	बनारस	O. R. Ry.
७२	शत्रुंजय*	पाडवादि आठ करोड मुनियोंकी जन्मभूमि	काठिया-वाड़	पालीताना	B. J. P. Ry.
७३	सुदर्शन सेठके चरण*	पटना, देखो	.	...	
७४	सोनागिरि*	नगानंगादि ३½ करोड़ मुनियोंकी मोक्षभूमि	बुंदेलखंड	सोनागिर	G. I. P. Ry.
७५	शौरीपुर उर्फ बटेश्वर	नेमनाथ स्वामीकी जन्मभूमि	देखो	बटेश्वर	
७६	शोलापुर	१३ मंदिर	दक्षिण	शोलापुर	
७७	हस्तिनापुर	शातिनाथ, व कुन्थनाथ व अरह नाथकी जन्मभूमि	उ. हिन्दु.	मेरठ	G. I. P. Ry.
७८	हुंमस पद्मावती	पद्मावतीका अति-शय क्षेत्र	दक्षिण साउथ कानेडा	कारकल-ग्राम	N. W. Ry.

नोट—कई एक अतिशय क्षेत्रोंका पोस्ट नहीं लिखा गया है । जिस भाईको

* द्रोणागिर—पर्वत दूसरा कोल्हा

६	तांगा बैलगाड़ी	... .	बनारस Benares	बनारस
...	... .	माघ सुदी ५	पालीताना Palitana	पालीताना
...	... ...	...	.. ...	... .
२	बैलगाड़ी	फागुन सुदी २ से १५ तक	सोनागिर Sonagir	सोनागिर . Datia state
...	. .	. ...	.. .	शोलापुर
.	. ...	. .	Sholapur शोलापुर	.. ...
२२	बैलगाड़ी वा तांगा	कार्तिक सुदी ८ से १५ तक	बहसूमा Bahsuma Dt. Meerut	. . ...
७३	बैलगाड़ी	... ...	हुमचाडा काठे Humchado- katte	तीर्थ हाली

आफिस वा तार घर का पूरा पता नहीं मिलनेसे इसमें
मालूम हो कृपा करके हमको सूचित करें
पुरसे १२ मील उत्तर में भी है.

श्री सम्मेद शिखर व उसके आस पासके तीर्थोंका परिचय।

पश्चिमसे आनेवाले जो भाई काशी (वनारस) आवें वे यदि सीधे वनारससे सम्मेदशिखर आना चाहते है तो ईशरी स्टेशनका टिकट लेवें और यदि वीचमें तीर्थ करते हुए आना चाहें तो इस प्रकार चलें। वनारससे आरा का टिकिट लेवें, आरामें चौकपर वावू हर-प्रसादजीकी धर्मशाला स्टेशनसे करीव १ मीलकी दूरीपर है वहां जाकर ठहरें। यहां वहुत मनोज्ञ मंदिर और चैत्यालय है, यहांपर स्वर्गीय दानवीर वावू देवकुमारजी एक सरस्वती भवन खोल गये हैं, जिसमें इस समय हजारों जैन ग्रन्थ मौजूद है। इस सरस्वतीभवनकी वरावरकी शानी रखनेवाला समाजमें एकभी दूसरा सरस्वती भवन नहीं है, इसको प्रत्येक यात्री देखें और जिनवाणी माताके लिये चार आंसू वहा आवें। आरासे गुलजार वाग (पटना) का टिकट लेवें। स्टेशनके पास जैनियोंकी धर्मशाला है वहां ठहरें, अथवा पटना शहरमें ठहरना चाहें तो जिया तमोली (वरई) की गलीमें पञ्चायती मंदिरके पास भी यात्रियोंको ठहरनेके लियेभी धर्मशाला है. इसी जगह श्रीभद्रबाहु स्वामी के शिष्य सम्राट श्री चन्द्रगुप्तकी राजधानी थी तथा यहींपर बौद्ध धर्मको राष्ट्रधर्म बनानेवाले देवोंके प्रिय सम्राट अशोककी भी राजधानी थी इसका प्राचीन नाम पाटलिपुत्र है। शहरमें कई एक मनोज्ञ मंदिर है वहाके दर्शन करके गुलजार वागमें सुदर्शन सेठ की निर्वाण भूमिके दर्शन करके गुलजार वागकी धर्म

शालके पास वाले नेमनाथ स्वामीके मदिरके दर्शन कर पटना से रवाना होवें और सीधी राजगृहीकी टिकट लेवें. वीचमें वकती आरे- पुर स्टेशनपर गाड़ी वदलकर छोटी गाड़ीमें वैठकर राजगृही आवें यह जगह आजसे अढ़ाई हजार वर्ष पेस्तर मगधाधिपति राजा श्रे- णिककी राजधानी थी जिसके चिन्ह अव भी है। स्टेशनके साम्हने अपनी धर्मशाला तथा वंगला है यहा की आव हवा वहुत अच्छी है, यह स्थान वैष्णवोंका भी तीर्थ है, यहांपर हर तीसरी साल लौंद के महीनेमें वड़ा भारी मेला लगता है जिसमें लाखों आदमी वाहरसे यहा पर आते है, यहापर पंच पहाड़ीके दर्शन करें प्रथम विपुला- चल पर्वतके जहापर भगवान महावीर स्वामीका समोशरण आया था, पीछे रत्नगिरी, उदयागिरी आदि पहाडियोंके दर्शनकरें जो भाई एक दम पाचों पहाड़ियोंके दर्शन करने में असमर्थ है वे पहलेकी ३ पहाड़ियोंकी वन्दना करें। दूसरे दिन २ पहाडियोंकी करें। यहांपर डोली तथा गोदी वाले भी आदमी मिलते है। धर्मशालासे १ मील की दूरी पर पहाड़की तलहटीमें गरम पानीके कई एक कुड है, यात्री चाहें तो कुन्डमें स्नानकर पीछे वदनाके लिये जावें। ब्रह्मकुन्डका पानी वहुत गरम है, सूरजकुन्डमें यात्री नहाते है, सप्तधाराका पानी वहुत ही उत्तम है, यहासे दर्शनकर वैल गाड़ी द्वारा कुन्डलपुर जावें। यह महावीर स्वामीकी जन्म भूमि है. यहापर पुराने शहरके चिन्ह वहुत दृष्टि गोचर होते है, इसका भी कभी न कभी भाग्य चमकेगा जव कि इतिहासके पत्रे इसके विवर- णोंसे सुशोभित होंगे क्योंकि “ कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च

पृथ्वी ” बौद्धमत की बहुत सी मूर्तियां खन्डित तथा अखंडित दोनों तरहकी यहा पर डरी हुई है, एक समय इस जगह पर बौद्ध मार्तंड अपनी प्रखर रश्मियोंसे ऐसा मौजूद था कि जगत भरमें कोई भी उसके विरुद्ध आंखभी नहीं उठा सकता था, आज वही अस्त होकर कालके गभीर गर्भमें ऐसा समाया कि उस जगहपर उसका एक भी अनुयायी दृष्टि गोचर नहीं होता है, अस्तु यहांके दर्शनकर विहार आवें। यहांपर दर्शनकर भगवान महावीरस्वामीकी निर्वाणभूमि पावापुरीमें आवें। धर्मशाला मंदिरके पास ही है, यहांपर तालाव के वीचमें पुराने समयका बना हुआ मंदिर है, इस मंदिरको तथा यहां के प्राकृतिक दृश्यको देखकर अपूर्व आनन्द होता है, ऐसा विलक्षण मंदिर भारतवर्ष भरमें कहीं नहीं है। दीपमालिका (दिवाली) के दिन यहां पर मेला लगता है। पावापुरीसे चलकर गुणावाजीमें ठहरें यहा पर भी तालावके बीचमें मंदिर है यह गौतमस्वामीकी निर्वाणभूमि है यहांसे १ मीलकी दूरीपर नवादा स्टेशन है, नवादासे रेलवे में बैठकर, नाथनगर उतरें। स्टेशनसे आधी मील की दूरीपर चम्पापुरी है। यहाके दर्शन कर यहांपर छपरावाले तथा कलकत्तेवालोंके मिलकर दो मंदिर है, दोनों जगह ठहरनेके लिये स्थान है। यहासे वांसुपूज्य स्वामीका निर्वाण हुआ है। यहांसे रेल तथा वैलगाड़ी द्वारा भागलपुर होते हुए मंदारागिरजी जाना चाहिये। भागलपुरमें ठहरें तथा साथमें कुछ आवश्यक सामान लेकर मंदारहिलका टिकट लेवें तथा सवेरे वहां पहुंचे और दर्शन करके शामको लौट आवें। उत्तर पुराणके अनुसार मंदारागिरी वांसुपूज्य

स्वामीकी निर्वाण भूमि है, यहांसे ईसरी अथवा गिरीडीकी टिकट लेवें। दोनों स्थानोंपर धर्मशालायें हैं। गिरीडी लगभग ४० वर्ष पहले एक सघन वन था पर अब एक जनपूर्ण नगर बन गया है। ईसरी तथा गिरीडी दोनों जगहसे सम्मेद शिखर पार्श्वनाथ हिल्के लिये बैलगाड़ी मिलती है। गाड़ी किराया १) से ३) रु. तक लगता है। ईसरीसे मधुवन गांव सड़कके रास्ते से ७ सात कोस है। परन्तु जंगलके रास्तेसे ३ कोस है। जंगलके रास्तेसे बैलगाड़ी नहीं जाती। गिरीडीसे मधुवन ९ कोस दूर है यात्रियोंके समयमें (दिवालीसे चैत्र तक) दुकानदार मधुवनमें रहते है जिनके पाससे यात्री लोग खाने पीनेका सामान लेते है। मधुवनमें ठहरनेके लिये ३ कोठियां है. जिनमें २ दिगम्बरियोंकी तथा एक श्वेताम्बरियोंकी है। सबसे ऊपर जो कोठी बनी है वह बीसपंथी (दि० जैन) कोठी है. उसके बाद श्वेताम्बरी कोठी है तथा सबसे नीचे तेरापथी (दि० जैन) कोठी है. यात्रीका जहां दिल चाहे वहां ठहरे, किसी बातकी रुकावट नहीं है, तीनों कोठियोंकी धर्मशालायें लाखों रुपयोंकी लागत की बनी हुई हैं। जिनमें एक साथ हजारों यात्री ठहर सकते है, हर एक कोठीमें अपना २ मंदिर भी है, जैनशास्त्रोंके देखनेसे मालूम होता है कि इस सम्मेदशिखरसे अनन्तानन्त चौबीसी मोक्षको गई हैं और अनन्तानन्त चौबीसी जायँगी तथा वर्तमानकालकी चौबीसीमेंसे श्रीऋषभदेवजी, बासुपूज्यस्वामी, नेमनाथजी तथा महावीर स्वामीको छोड़कर बाकीके २० तीर्थंकर इसी पर्वतसे मोक्षको गये है, इससे इस पर्वतका कंकड २ पवित्र है, इस लिये पहाड़पर मल

मूत्रको डालना थूकना तथा जूता पहिनकर जाना भी एक तरहका पाप है, उससे यात्रीको वचना चाहिये।

यात्रीको चाहिये कि वह स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहिन ४ बजे रात्रिके लगभग पर्वतबंदनाके लिये चले और वन्दना करके डेरापर लौट आवे। पर्वतपर जानेके लिये सरकारी रास्ता ऐसा बना है कि अन्धेरी रातमेंभी यात्री अकेला चला जा सकता है। मधुवनसे अढ़ाई मील ऊपर चढ़नेसे गंधर्वनाला आता है—वहांसे डेढ़ मील ऊपर जानेसे सीतानाला आता है, इस नालेका पानी वरफ जैसा ठंडा रहता है, यहांपर यात्री लोग अपनी २ पूजनकी सामग्री व पुञ्ज धो लेते हैं, यहासे १ मील तक पत्थरकी सीढ़ियां भी वनी है। वड़ा बिलक्षण आनंद मालूम होता है, एक तरफ नालेका कलकल शब्द सुनाई पड़ता है, दूसरी ओर प्रकृति देवीका रमणीक उपवन (वगीचा) लह लहाता दिखाई पड़ता है। साम्हने सीढ़ियोंकी पंक्ति अत्यंत मनोहर दीख पड़ती है, उन गगनचुम्बी शैल शिखरोंको देखतेही चपल मन उनके पास उड़ जाता है। उन महात्माओंको धन्य है कि जिन्होंने अपने तथा जगतके उपकारके लिये ऐसा निर्जन स्थान ढूंढ़ा। आज तक भी उस जंगलमें उन ऋषियोंके पवित्र उपदेश की झनक कानोंमें पड़ती है। उनका उपदेश भी कैसा था जिसकी शान्त, उदार तथा पवित्र छायामें सारे संसारके प्राणियोंको सच्ची शांति मिलती थी (सत्वेषु मैत्री गुणिषुप्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरित्वम्, माध्यस्थभावे विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देवः)।

अस्तु यात्री सूर्योदयके करीब २ गौतमस्वामीकी गुमठीके पास पहुँच जाते है, फिर कुंथुनाथकी टोंक आती है इसके बाद क्रमसे, नमिनाथ, अरहनाथ, मल्लिनाथ, श्रेयान्सनाथ, पुष्पदन्त, पद्मप्रभु तथा मुनिसुव्रत स्वामीकी टोंकके दर्शन करते हुए चन्द्रप्रभुकी टोंक-पर जाते है फिर दक्षिणकी ओर क्रमसे आदिनाथ अनन्तनाथ, सम्भवनाथ, वांसपूज्य और और अभिनंदननाथकी टोंकपर जाते हुए जलमंदिरमें जाते है वहांके दर्शन करके फिर ऊंचे चढ़कर गौतम-स्वामीकी टोंकपर जाते है वहांसे चलकर क्रमसे धर्मनाथ, सुमतिनाथ, शान्तिनाथ, विमलनाथ, सुपार्श्वनाथ, महावीरस्वामी, अजितनाथ और नेमिनाथकी टोंकपर जाकर अन्तमें पार्श्वनाथ स्वामीकी टोंकपर जाना चाहिये। यह टोंक सबसे ऊंची होनेके कारण चारों तरफसे कई कोसकी दूरीपरसे दिखाई देती है। यहांसे पार्श्वनाथ स्वामीने मोक्ष लाभ किया था। जैनशास्त्रोंमें इसका नाम सुवर्णभद्र लिखा है, इस जगहसे बहुत दूरकी चीजें दिखाई पड़ती है, दूसरी ओर-को नीमयाघाट व गोमोह स्टेशन नजर आता है। इस टोंकसे दो फर्लांग नीचे सरकारी बंगला है, बंगलासे थोड़ी दूर आनेपर दो मार्ग मिलते है, जिनमें से बायें हाथवाले रास्तेको छोड़ देना चाहिये, क्योंकि वह नीमयाघाटको जाता है, दूसरे रास्तेसे ४ मील उतर-नेपर गन्धर्वनाला मिलता है यहापर जलपानके लिये लड्डू वगैरह मिलते हैं। यहांसे चलकर यात्री चायका वगीचा पार करता हुआ ठीक मधुवनमें आ जाता है। प्रायः १२ बजे तक यात्री लौटकर आजाता है। ३ री बन्दनाके बाद यात्री लोग पर्वतकी परिक्रमा देते

है-परिक्रमाका रास्ता प्रायः ११ कोसके लगभग है. जो भाई पैदल जानेसे अशक्त हैं वे डोलीकरके भी जा सकते है। डोलीका भाड़ा २॥) रुपयाके करीब लगता है। डोलीकी जरूरतवालोंको चाहिये कि वे बन्दनाके एक दिन पहले ही कोठीके मुनीमको डोलीके लिये सूचना दे देवें। बालकोंके लिये गोदीवाले भी मिलते है। यात्री लोग आरामके लिये, वर्तन वगैरह भी कोठीसे रसीद लेकर ले सकते है शिखरजीसे यात्री कलकत्ता इत्यादि छोड़ कर चम्पापुरी जाना चाहें तो वे गिरींडी जाकर नाथनगरका टिकट लेवें, और जो कलकत्ता जावें वे ईसरी व गिरीडी जहां चाहें वहां जावें हावड़ाका टिकट लेवें, गिरींडीसे कलकत्ताका किराया २।≈) लगता है व ईसरीसे २।) लगता है। कलकत्तेमें हरीसनरोड बड़े बाजारमें ३,४ धर्मशालायें हैं १ सेठ रामकृष्णदासजीकी तथा दूसरी बाबू सूर जमलकी हैं दो और किसीकी है, कलकत्तेमें दिगम्बरियोंके ५,६ मंदिर हैं तथा श्वेताम्बरियोंके ३—४ हैं। वहांसे गुणावा, पावापुरी तथा राजगृही होते हुए पटनाकी टिकट लेवें वहांसे आरा जावें। जिसको शिखरजीसे काशी या कलकत्ता न जाना हो व सीधा दक्षिणकी तरफ जाना हो तो वे ईसरीसे गोमो या आसनपोल जाकर नागपुरका टिकट लेवें। या जो खंडगिरी जाना चाहें वे गोमोसे सीधा भुवनेश्वरका टिकट लेवें।

शिखरजीसे जो आदमी कलकत्ता व खंडगिरी जाना चाहें उनको प्रथम खंडगिरी जाना चाहिये। खंडगिरी जानेवालोंको

ईसरी जाना होगा, वहांसे तीसरा स्टेशन गोमोह (Gomoh) है वहांका टिकट लेवें बाद वहासे सीधा भुवनेश्वर स्टेशनका टिकट लेवें भाड़ा करीब ४) चार रुपया लगता है, गोमोहसे गाड़ी बदलना होगी तथा खरगपुर भी गाड़ी बदली जायगी फिर सीधे भुवनेश्वर पहुँच जांयगे। वहासे बैलगाड़ी या तांगामें जाकर अपूर्व प्राचीन तीर्थके दर्शन करें। इस जगहपर ऐसी २ कई एक गुफायें पहाड़ में उकेरी हुई है कि जिनको देखकर हमारे प्राचीन कला कौशल्य की याद आ जाती है। स्थान ऐसा रमणीक तथा मनोहर है कि छोड़नेको जी नहीं चाहता। ठहरनेके लिये धर्म-शालाका प्रबन्ध भी हो रहा है।

वहाके दर्शनकर पीछे कलकत्ता आवें जिसे खंडगिरी उदया-गिरी नहीं जाना है वह सीधा कलकत्ता जावे। वहासे चंपापुरी, (नाथनगर) नवादा, पावापुरी, राजगृही, कुण्डलपुर, विहार होता हुआ पटनाको चला जाय।

(सम्मेदशिखर माहात्म्यादि यंत्र)

नंबर.	टूंकोंके नाम.	तीर्थंकरोंके नाम.	कितने मुनि मोक्ष गये.	दर्शन करनेका फल.
१	सिद्धवर-कूट	आजित नाथ	एक अरब अस्सी कोड चौवन लाख	बत्तीसकोडि प्रोषध व्रत करनेसे फल प्राप्त होता है सो एकहीवार
२	धवलदत्त	संभव-नाथ	नव कोड़ा कोड़ि बहत्तर लाख बियालीस हजार सातसो	टूंकका दर्शन करनेसे बियालीस लाख प्रोषधोपवासका फल होता है
३	आनंद	अभिनंद-ननाथ	सत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तर कोड़ि सत्तर लाख, बिया-लीस हजार नवसो नवाणु	एक लक्ष प्रोषधो-पवासका फल
४	अविचल	सुमति नाथ	एक कोड़ा कोड़ी चोरासी क्रोड़, बहत्तर लाख, इ-क्यासी हजार सातसो	एक कोड़ि प्रोषधोप-वासका फल
५	मोहन	पद्मप्रभु	निन्यानवे कोड़ि, सत्यासी लाख, तियालीस हजार सातसोसत्तावीस	एक कोड़ि पोषधोप-वासका फल
६	प्रभास	सुपार्श्व नाथ	उनचास कोड़ा कोड़ि चोरासी क्रोड़, बहत्तर लाख सातहजार सात-सो बियालिस	बत्तीस कोड़ि प्रोषधो पवासका फल

नंबर.	टूंकोंके नाम.	तीर्थंकरोंके नाम.	कितने मुनि मोक्षगये.	दर्शन करनेका फल.
७	ललित कूट	चंद्रप्रभुजी	चोरासी अरब, बीस कोड़ि, बहत्तरलाख, चोरासी हजार, पांचसो पञ्चावन	सोला लाख अस्सी हजारप्रोषधोपवासका फल
८	सुप्रभ	पुष्पदंत	निन्यानवे क्रोड़, नवलाख, सात हजार सातसो अस्सी	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल
९	विद्युत	शीतल नाथ	अठारा कोड़ा कोड़ि, बियालीस कोड़ि, बत्तीस लाख, बियालीस हजार नवसो पांच	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल
१०	संकुल	श्रेयांस नाथ	छ्यानवे कोड़ा कोड़ि, छ्यानवे कोड़ि, छ्यानवे लाख, नवहजार पांचसो बियालीस	बत्तीसक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल
११	वीर संकुल	विमल नाथ	सत्तर कोड़ि साठलाख छे हजार सातसो, बियालीस	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल.
१२	स्वयंभू	अनंत नाथ	छ्यानवे कोड़ा कोड़ि सत्तर कोड़ि सत्तर लाख सत्तर हजार सातसो	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल

नम्बर.	टूंकोंके नाम	तीर्थंकरोंके नाम.	कितने मुनि मोक्ष गये	दर्शन करनेका फल
१३	सुदत्तवर कूट	धर्मनाथ	उनतीस कोडाकोड़ि, उन्नीस कोड़ि, नवलाख नव हजार सातसो. पंचाणवे	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल.
१४	प्रभास	शांतिनाथ	नव कोड़ाकोड़ि, नवलाख, नवहजार नवसो निन्यानवे	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल.
१५	ज्ञानधर	कुंथुनाथ	छयानवे कोड़ाकोड़ि, छयानवे कोड़ि, बत्तीसलाख छयानवे हजार, सातसो बियालीस.	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल.
१६	नाटक	अरनाथ	निन्याणवेकोड़ि, निन्यानवेलाख निन्यानवे हजार	छयानवे कोड़ि प्रोषधोपवास फल.
१७	शवल	मल्लिनाथ	छयानवे कोड़ि	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल.
१८	निर्जर	मुनिसुव्रतनाथ	निन्यानवे कोड़ा कोड़ि निन्यानवे कोड़ि नवलाख, नवसो निन्यानवे	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल.
१९	मित्रधर	नमिनाथ	नवसो कोड़ाकोड़ि एक अरब, पेंतालीसलाख, सातहजार, नवसो बियालीस.	एकक्रोड़ प्रोषधोपवासका फल.

नम्बर.	टूंकोंके नाम	तीर्थंकरों के नाम	कितने मुनि मोक्ष गये	दर्शन करनेका फल.
२०	सुवर्णभद्र	पार्श्वनाथ	चोरासीलाख	दोगतिका बंध छूट जाता है
नोट—पर्वतोंकी चोटीको टूंक या कूट कहते हैं			कोटिको कोटिसे गुणाकरनेको कोड़ा कोड़ि कहते हैं कोड़ि तथा कोटि एकोड़ सख्यावाचक शब्द है	सोलापहर चार प्रकारके अहार तजनेको एक प्रोषध व्रत होता है.

श्री ऋषभदेव तीर्थंकरसे अंत तक महावीर स्वामीपर्यंत वर्त्तमान चोवीसींमें इतने मुनि मोक्ष गये हैं.

श्री गिरनारजी तरफकी यात्रा।

बड़ी।

दिल्ली से	हिंडौन रोड (रेलगाड़ी.)	११४	मील
हिंडौनरोड से	चादनपुर	३२	मील (वैलगाड़ी)
चांदनपुर से	हिंडौन रोड		”
हिंडौन रोडसे	जयपुर	७६	मील (रेल)
जयपुर से	अजमेर	८४	मील (रेल)
अजमेर से	चित्तौड़	११५	मील (रेल)
चित्तौड़ से	उदयपुर	६९	मील (रेल)

उदयपुर से	केशरियाजी	३०	मील (बैलगाड़ी)
केशरिया से	उदयपुर		,,
उदयपुर से	इन्दौर	२६०	मील (रेल)
इन्दौर से	बनेड़ा	१६	मील (बैलगाड़ी)
बनेड़ा से	इन्दौर		,,
इन्दौर से	बड़वानी	९०	मील (बैलगाड़ी)
बड़वानी से	मऊकी छावनी	७७	मील (बैलगाड़ी)
मऊकी छावनी से	सनावद	३९	मील (रेल)
सनावद से	सिद्धवरकूट	६	मील बैलगाड़ी
सिद्धवरकूट से	बड़वाहा		,,
बड़वाहा से	खंडवा	३४	मील (रेल)
खंडवा से	अकोला	५६४	मील (रेल)
अकोला से	अंतरीक्ष पार्श्वनाथ	१९	कोस (बैलगाड़ी)
अंतरीक्ष से	कारंजा	२०	कोस (बैलगाड़ी)
कारंजाजी से	भातकुली	१७	कोस (बैलगाड़ी)
भातकुली से	एलचपुर	११	कोस (बैलगाड़ी)
एलिचपुर से	मुक्तागिरी	२	मील (बैलगाड़ी)
मुक्तागिरी से	अमरावती	३०	मील (बैलगाड़ी)
अमरावतीसे से	नागपुर	११४	मील (रेल)
नागपुर से	कामठी	९	मील (रेल)
कामठी से	रामटेक	१५	मील (बैलगाड़ी)
रामटेक से	कामठी	,,	,,

कामठी से	मनमाड़	३१७	मील (रेल)
मनमाड़ से	नासिक	४६	मील रेल
नासिक से	गजपंथाजी	४	मील बैलगाड़ी
गजपंथा से	नाशिक		„
नाशिक से	पूना	११८	मील रेल
पूना से	बारसी	११५	मील रेल
बारसी से	कुंथलगिरी	२५	मील बैलगाड़ी
कुंथलगिरी से	बारसी		„
बारसी से	बम्बई	२३४	मील रेल
बम्बई से	सूरत	११७	मील रेल
सूरत से	बड़ोदा	८१	मील रेल
बड़ोदा से	पावागढ़ हिल	३०	मील रेल
पावागढ़ से	बड़ोदा	„	„
बड़ोदा से	अहमदाबाद	६२	मील रेल
अहमदाबाद से	पालीताना	१८०	मील रेल
पालीताना से	भावनगर	३३	मील रेल
भावनगर से	जूनागढ़	१२७	मील रेल
जूनागढ़ से	गिरनारजी	४	मील तांगा
गिरनारजीसे	जूनागढ़	„	„
जूनागढ से	जटलसर	११	मील रेल
जटलसर से	महसान	२०२	मील रेल
महसाना से	तारंगा हिल	३६	मील रेल

तारंगा से	आबूरोड	१००	मील रेल
आबूरोड से	आबूजी	१७	मील तांगा
आबूजी से	आबूरोड	,,	,,
आबूरोड से	अपने घर ।		

शिखरजीसे सीधे गिरनारजीको जानेवालेको ईसरी स्टेशनसे आगरा फोर्टका टिकिट लेना चाहिये. आगरेसे सोनागिरी हो आवे-बाद वहासे लोटकर आग्रा जावे. वहांसे एक टिकिट महसाणाका लेवे. उसीसे यात्री एक दिन जयपुर एक दिन अजमेर उतर सकता है बाद वहांसे जूनागढ़का टिकट लेकर गिरनारजी जावे, रास्तेमें टुंडला. आगरा-बांदीकुई महेसाणा, वीरमगाम-वढ़वाण-धोला व जेतलसर गाड़ी बदलनी पड़ती है.

श्री गिरनारजीकी यात्रा ।

छोटी.

जयपुर से	अजमेर	८४	मील रेल
अजमेर से	चित्तौड़	११६	मील रेल
चित्तौड़ से	उदयपुर	६९	मील रेल
उदयपुर से	केशरियानाथ,	३०	मील (बैलगाड़ी)
केशरिया से	उदयपुर		,,
उदयपुर से	चित्तौड़	६९	मील रेल
चित्तौड़ से	इन्दौर	१९१	मील रेल

इन्दौर से	सनावद	५२	मील रेल
सनावद से	सिद्धवरकूट	६	मील बैलगाड़ी
सिद्धवर कूट से	बड़वाहा		,,
बड़वाहा से	खंडवा	३४	मील रेल
खंडवा से	अकोला	१६४	मील रेल
अकोला से	अंतरीक्ष	१९	कोस बैलगाड़ी
अंतरीक्ष से	कारंजा	,,	,,
कारंजा से	मातकुली	१७	कोस बैलगाड़ी
मातकुली से	एलिचपुर	११	कोस ,,
एलिचपुर से	मुक्तागिरी	२	मील ,,
मुक्तागिरी से	अमरावती	३०	मील ,,
अमरावती से	भुसावल	१४३	मील रेल
भुसावल से	मनमाड़	११४	मील रेल
मनमाड़ से	मांगीतुंगी	२४	कोस बैलगाड़ी
मांगीतुंगी से	मनमाड़	२४	कोस बैलगाड़ी
मनमाड़ से	नासिक	४९	मील रेल
नासिक से	गजपंथा	४	मील तांगा
गजपंथा से	नाशिक		,,
नासिक से	बम्बई	११७	मील रेल
बम्बई से	सूरत	१६७	मील रेल
सूरत से	बड़ौदा	८१	मील रेल
बड़ौदा से	पावागढ़ हिल	३०	मील रेल

पावागढ़ से	बड़ौदा	३०	मील रेल
बड़ौदा से	अहमदाबाद	६२	मील रेल
अहमदाबाद से	पालीताना	१८२	मील रेल
पालीताना से	जूनागढ़	१२४	मील रेल
जूनागढ़ से	गिरनारजी	४	मील बैलगाड़ी
गिरनार से	जूनागढ़		"
जूनागढ़ से	वैरावल	५१	मील (सोमनाथ) रेल
वैरावल से	बम्बई		(जहाज से आ सकते हैं)
वैरावल से	जूनागढ़	५१	मील रेल
जूनागढ़ से	तारंगा हिल	२९२	मील रेल
तारंगा से	आबू जी	१०८	मील रेल
आबू रोड से	आबू जी	१७	मील बैलगाड़ी
आबूजी से	आबू रोड		"
आबू रोड से	अपने घर		

दिल्लीसे गिरनारजी जानेवालेको एक टिकट दिल्लीसे महेसाणाका लेना चाहिये. रास्तेमें वह एक दिन जयपुर में एक दिन अजमेर में दो दिन आबूरोडपर उतर सकता है.

महेसाणासे तारंगाहिल्का टिकट लेकर तारंगाका दर्शन कर आवे.

बाद लौटकर महेसाणा आवे. वहासे जूनागढ़का टिकट लेवे वहां गिरनारजीकी यात्रा करके फिर पालीताणा (शत्रुंजय) का दर्शन करे. इसपर्वतको श्वेतांबरीलोग सिद्धाचल कहते हैं. उन लोगोंके

यहां करोड़ों रुपयोंकी लागतके हजारों मंदिर पहाड़पर हैं. यहांसे भावनगर होकर फिर अमदाबाद जावे वहांसे बड़ोदा होकर पावागढ़-हो आवे. बाद अंकलेश्वरका टिकट लेकर सजोत हो आवे बाद अंक-लेश्वर आकर सूरत जावे वहांसे बारडोलीका टिकट लेकर महुआ हो आवे. वहांसे लौटकर सूरत आवे बाद बंबई जावे.

जैनबद्री मूड बद्रीकी यात्रा ।

बम्बई से पूना, ढौंड, शोलापूर होकर आरसीकेरी स्टेशन का टिकट लेना चाहिये बम्बईसे शोलापुर का किराया ४।≈) तथा वहासे आरसीकेरीका ४।)॥ लगता है ।

जैनबद्री जानेके लिये आरसीकेरीसे २ दिनके लिये खानेका सामान और एक नौकर जो उस देशकी तथा हमारी भाषा समझता हो साथमें ले जावे । यहांसे १० मील पर श्रवणबेलगुल स्थित है। धर्मशालामें ठहरकर पर्वत वंदना करे । पर्वत दो हैं १—विन्ध्यागिरी २रा चन्द्रगिरी है । पर्वत पर जानेके लिये स्व० सेठ माणिकचंद जी ने सीढ़ियां लगवा दी हैं जिससे बच्चा भी सुगमतासे चला जा सकता है । रास्तेमें ३—४ जगह दर्शन मिलते है । ऊपर श्री गोमट्टस्वामी की मूर्ति शांति मुद्रा युक्त करीब ६३ फुटकी ऊँचाई की खड़ी है । भारतमें इसके समान कोई भी प्रतिबिंब नहीं है । इस पहाड़पर ७ मंदिर हैं ।

चंद्रगिरी—(श्री भद्रबाहु श्रुत केवली) इसपर भी चढ़नेके

लिये सीढ़ियां बनी हुई है। इस पर्वतपर ध्यान करने योग्य बड़ी २ शिलायें और गुफाये है। चढ़नेवालोंको दाहिनी तरफसे जानेसे श्री **भद्रबाहुश्रुत केवली** की गुफा मिलती है। उसके भीतर श्रीपरमाचार्यके चरणारविन्द करीब २ बालिस्त लम्बे पाषाणमें अंकित है। इन चरणों पर छत्ररूप एक बड़ा भारी पर्वत है। इससे अपूर्व अनुभवका लाभ होता है। पहाड़पर और भी कई जगह मूर्तिये है। जैन बद्रीसे ८० मील पैदल मूडबद्री है सो बैलगाड़ीद्वारा जावे. मद्राससे बेंगलोर होकर आरसीकेरी का टिकट लेना चाहिये.

श्री क्षेत्र सितामूर।

यह प्राचीन क्षेत्र है। यहांपर एक मंदिर करीब १५०० वर्षका प्राचीन है। चैत्रमासमें बड़ा भारी उत्सव होता है स्टेशन **तिण्डिवनम्** [S.I.R.] है। यहांसे करीब १० मीलपर यह क्षेत्र स्थित है।

प्रसिद्धता।

दिल्ली—यह शहर बहुत पुराना है। यह प्राचीन समयसे हर एक राजाओंकी राजधानी होती आई है। हिंदुस्थानमें महान ब्रिटिश राज्यकी राजधानी भी यही है। देखने योग्य स्थान निम्न प्रकार हैं।

लाल किला, सुनहरी मसजिद, जुम्मासजिद, अजायबघर, घंटाघर पृथ्वीराजका किला, कुतुब सा. की लाठ, चांदनीचौक भरतखंडके

श्री गिरनारजी

श्री गिरनारजी
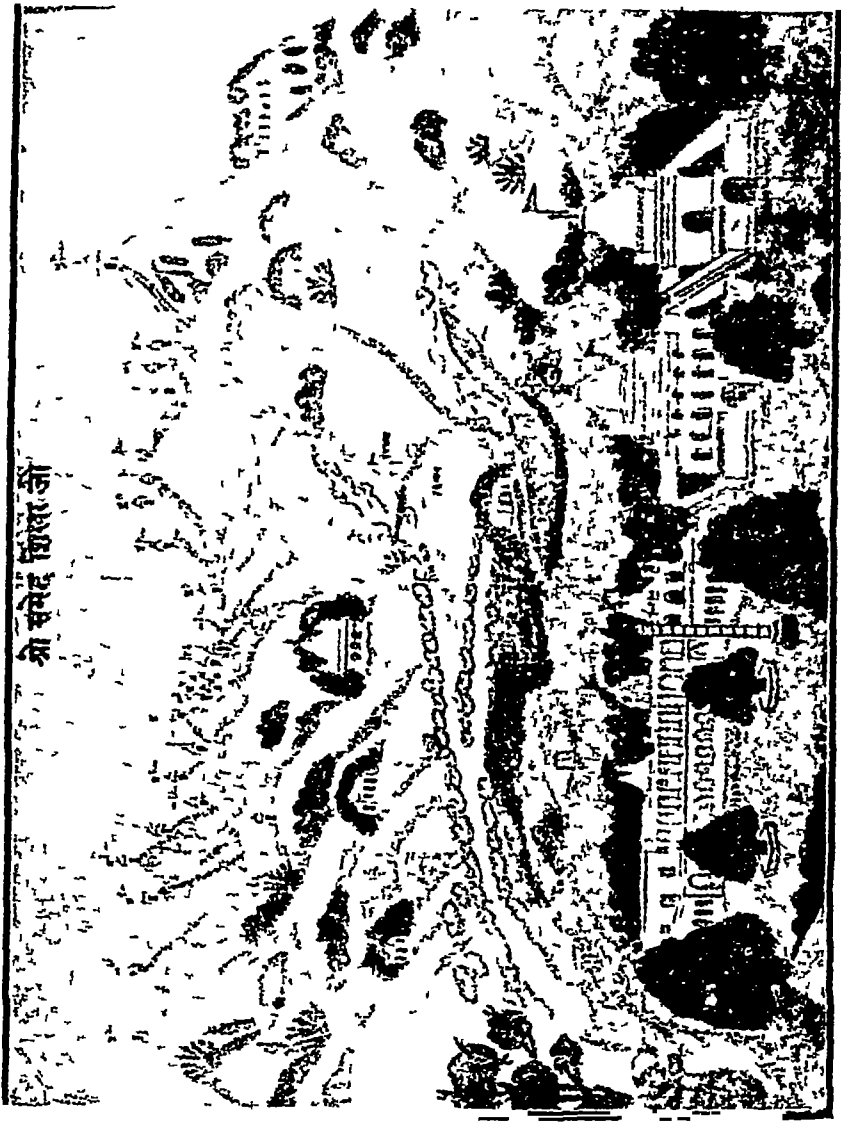
श्री सम्मेद शिखर जी
श्री सम्मेद शिखर जी
श्री सम्मेद शिखर जी

अत्युत्तम बजारोंमें से है, अशोक स्तंभ, यहां गोटा किनारी, कपड़े आदिका बहुत व्यापार होता है। जैनमंदिर १९ शिखर-बन्द लाखों रुपयोंकी लागतके है। चैत्यालय ७ तथा धर्मशास्त्र २००० है।

जयपुर—हिंदुस्थानमें यह शहर भी प्रसिद्ध शहरोंमें से है। जैनमंदिर शिखरबन्द ५२ चैत्यालय १८ और नशियाजी १८ है। शास्त्रसंख्या ४००० है।

देखने योग्य स्थान—महाराजासा०का महल, राम निवास बाग, हवामहल, नयाघाट, पुरानाघाट, । आम लोगोंके वास्ते मेओ हास्पिटिल, अजायबघर, पुरानी राजधानी अंबर यहां स्टेशनसे आध मील पर एक धर्मशाला है इसके पास ही दो मंदिर है।

अजमेर—यहां मंदिर १० है सेठ नेमीचंदजीकी नशिया बहुत ही मनोज्ञ है।

चित्तौड़—यहां का किला दर्शनीय है।

उदयपुर—यह मेवाड़की राजधानी है। एक बड़ा तालाब अथाह पानीसे भरा हुआ है। यहां कई जैन मंदिर है।

इन्दौर—यहां ९ बड़े मंदिर है एक चैत्यालयमें ७२ प्रतिमा स्फटिक माणि की है। विद्यालय, बोर्डिङ्ग आदि जैन संस्थाओंको देखना चाहिये। ठहरनेके लिये नशियांजीमें जैन धर्मशाला है।

बड़वानीजी—यहां २ धर्मशाला हैं इनमें ठहरें। बड़े सुबह उठकर बंदनाको जाना चाहिये। ४ मील ऊपर जानेसे ११ मंदिर

मिलते हैं जो कि नये बने हैं । यहां से १ मील आगे चूलगिरी पर्वत है रास्तेमे २० हांथ ऊंची इन्द्रजीत और कुंभकरणकी प्रतिमा हैं। ऊपर पहाड़ पर भी १ धर्मशाला है।

सिद्धवरकूट—यह स्थान चारों तरफ पहाड़ियोंसे घिरा हुआ रेवा नदीके तट पर स्थित है। यहां ४ मंदिर हैं। धर्मशालाभी है। यहां पर हर वर्ष मेला भरता है। इस पर्वतसे साढ़ेतीन करोड़ मुनि और दो चक्री तथा १० कामदेव मोक्ष गये हैं।

नासिक—स्टेशनसे शहर ५ मील है। यह शहर गोदावरीके किनारे पर है। वर्तन अच्छे बनते हैं।

पूना—यहांपर दो मन्दिरजी दि० आम्नायके हैं और ठहरनेके लिये स्टेशनके पास धर्मशाला है। यहांपर चित्रशालप्रेस देखने योग्य है।

बम्बई—जी. आई. पी. रेलवे से आनेवाले यात्रियोंको बोरीबंदर और बी. बी. एन्ड सी. आई. से आने वालोंको ग्रान्टरोड स्टेशन पर उतरना चाहिये यहांसे ।≈) आनामें घोड़ा गाड़ी भाड़े करके हीराबाग धर्मशालामें आना चाहिये।

मंदिर ९ हैं । समुद्रके किनारे स्व० सेठ माणिकचंदजीके मंदिरमें स्फटिकमणिकी प्रतिमा तथा सारा चैत्यालय चारों ओर कांचसे जड़ाया गया है। देखने वालोंको कई समोसरण दीखते हैं । यहां विक्टोरिया गार्डन, हेंगिंग गार्डन, जनरल पोष्ट आफिस, अपोलो बंदर रेसमकी मिल, टौन हाल, कुलाबा, आदि देखने योग्य स्थान है ।

सूरत—यह शहर भी बड़ा है। यहां पर ६ जैन मदिर है। स्टेशनसे ≈) में चंदावाड़ी नामकी धर्मशाला स्व० सेठ माणिकचंदजी की बनाई हुई है वहां ठहरें। दिगम्बर जैन का आफिस भी देखने योग्य है।

बड़ौदा—जैन मदिर २ है। एक कन्याशाला भी है। देखने योग्य स्थान–जलकल, देवमन्दिर, बड़ाबाग, चिड़ियाखाना राजमहल, रामपहल, सोने और चांदी की तोपें, तालाव आदि हैं।

अहमदाबाद—यात्रियोंके ठहरनेकास्थान तीन दरवाजाके नजदीक प्रेमचद मोतीचंद बोर्डिंगमें धर्मशाला है यहापर दिगम्बर जैनियोंके मदिर २ हैं। एक बोर्डिङ्ग है। देखने योग्य स्थान—स्वामी नारायण का मंदिर, पिंजरापोल, चिन्तामणिका श्वेताम्बर मंदिर, सांवर मतीनदी आदि हैं यहां कपड़े बुननेकी बहुतसी मिलें हैं.

कलकत्ता—ई. आई रेल्वे बंगाल नागपुर रेलसे आनेवालोंको हावडा स्टेशनका व आसाम तरफसे ईस्टर्न बेंगॉल रेल्से आनेवालेको सालदाह स्टेशनका टिकट लेना चाहिये. यह शहर हुगली नदीके किनारेपर है. स्टेशनसे आठ आनेमें घोड़ागाड़ी किराया करके करीब १ मील दूर हेरीसन रोडपर सेठ. रामकिसनदास हरकिसनदास व बा. सूरजमलजीकी व एक दो अन्य धर्मशाला उस जगहपर हैं. जहां सुभीता होवे वहा ठहरना चाहिये.

व एक धर्मशाला शामाबाई गलीमें सेठ. मोतीचंद लाभ चन्दजीकी बनवाई है उसमें भी ठहर सकते हैं.

यहा दिगंबरी आम्नायके ६ मंदिर है. हालमें जो नया मंदिर बना है वह रामकीसनदासकी धर्मशालाके नजदीक अपर चितपुररोड नं. ८२ में बहुतही मनोज्ञ बना है. अलावे इसके पुरानामंदिर, अमृतलागलीमें १ हरिपदोबाबूकी गलीमें पुराणीवाडीका मंदिर व कोलूटोलामें एक एक मंदिर है. एक मंदिर बेलगछियामें धर्मशालासे करीब दो माईलकी दूरीपर बगीचेमें है. ट्रामगाड़ी द्वाराभी इस बगीचेमें शामबजार होकर जा सकते हैं.

मंदिरोंके दर्शनके अलावे यहा अजायबघर, चिड़ियाखाना-दुलीचंदजीका बगीचा, राय बद्रिदासजीका मंदिर (श्वेतांबरी) (जो माणिकटोलामें है) किल्ला फोर्ट विलियमका हायकोर्ट–डेलहाउसी स्क्वेयर–ईम्पीरीयल लायब्रेरी–कालीजीका मंदिर आदि स्थान देखने योग्य है.

बनारस—गंगाजीके किनारे पर यह शहर है. मुगलसराय स्टेशनसे आते समय गंगाजीके पुलपरसे इस शहरका दृश्य बहुतही सुंदर मालूम पड़ता है.

यह बहुत प्राचीन शहर है। राजघाट उर्फ काशी स्टेशन या बनारस छावणी स्टेशनसे करीब १ मील दूरपर मैंदागिनीमें बिहारीलालकी धर्मशाला चोकपर टाउनहॉलके नजदीक है वहां या भीलूपुरमें भी धर्मशाला है वहां ठहरें. मैंदागिनीमें धर्मशालावा मंदिर है। वहांसे दर्शनकरके भीलूपुराका दर्शन करके शहरमें दो मंदिर और चैत्यालय भी है उनका दर्शन करें।

यहा तान्बे पीतलके बरतन बहुत उमदा बनते है. रेशमी कपड़ा व कसबी कामका कपड़ा बहुत बढ़ीया तैयार होता है.

गंगाकिनारे भदेनीघाटपर स्याद्वाद महाविद्यालय तथा बोर्डिंग हाउस है. यात्रियोकों उसका निरीक्षण करके उसमें यथाशक्ति मदद भी देना चाहिये.

श्री पार्श्वप्रभू श्री सुपार्श्वनाथ स्वामीकों मदिर किनारेपर देखने योग्य है.

यह शहर वैश्णवसप्रदायका बहुत पवित्रस्थान गिना जाता है. विश्वनाथ महादेव के अलावे हजारों शिवालय यहां नजर आते है गंगाकिनारे मणिकर्णिका घाट तथा अन्यघाट देखने योग्य हैं. यात्रियोंको नावमें बैठकर नदी किनारेका दृश्य देखना चाहिये. चार आनेमें तीन आदमी नावमें जा सकते हैं.

यात्रियोंको यहासे घोड़ा गाड़ी या बैलगाड़ी किराये करके चंद्रपुरी सिंहपुरीका दर्शन कर आना चाहिये.

कानपुर—यह शहर दिल्लीसे २७० मील (पूर्व यमुना नदीके) किनारे ईस्टइन्डिया रेलवेका स्टेशन है. यहां पाच रेल्वे इकट्ठी होती हैं. अनाजके व्यापारमें हिंदुस्थानमें दूसरा शहर है.

चमड़ेका जूता-तथा अन्य सामान भी यहां बाहुल्यतासे बनता है.

यहां लालइमली मील—मूरमिल-येलजिन मील अन्य स्थान देखने योग्य हैं.

यहां शहरमें तीन मंदिर है. बड़े मदिरमें वेदीके ऊ' मुनेगी काम देखने योग्य है.

स्टेशनके पास धर्मशाला है. एक छोटी धर्मशाला शहरमें मंदिरके रास्तेमें भी है.

अलाहाबाद—स्टेशनके पास धर्मशाला है. यहां जैन अजैन सब लोग ठहरते है. शहरमें भी पंचायती मंदिरमें ठहरनेको भी छोटी धर्मशाला है. यहां तीन मंदिर है. एक बोर्डिंगहाउस कर्नल गंजमें बा० सुमेरचंदकी धर्म पत्नीका स्थापित किया हुआ भी है.

देखने योग्य स्थान—किला—यमुना गंगाका संगम—पब्लिक पार्क वैगरह ।

श्री सम्मेद शिखरजीसे भारतवर्षके बड़े बड़े शहरोंतक जानेकेलिये रेल किरायेकी सूची.

नोट—१. श्री सम्मेद शिखरजी इस्टईन्डिआ रेलेवेकी गिरीडी स्टेशनसे १८ मील ईसरी स्टेशनसे १४ मील दूर पड़ता है. पक्की सड़कका रस्ता है.

दोनो स्टेशनपर गाड़ी मिलती है. मगर जबसे ईसरी स्टेशन खुला है तबसे प्रायः गिरीडीका रास्ता बंद हो गया है.

अब तो ईसरीमें स्टेशनपर दिगंबरी कोठीकी तरफसे धर्मशालाका कुआ बनकर तैयार हो गया है।

२. ईस्ट इन्डिया रेलवेसे दूसरी दूसरी रेलवेलाईनोंके स्टेशनोंका जो भाड़ा लगता है. वह भी जहांतक मिला है इस सूचीमें लिखा गया है।

३. ईसरीको गिरीडीसे ईस्ट ईन्डिया रेलवेके जंकशनोंका भाड़ा लिया है. जिन भाईयोंको जिस जंकशन द्वारा जाना हो वह उस

जंकशनसे अपने ग्रामके बड़ी स्टेशनसे क्या किराया लगेगा उसका हिसाब उसपरसे निकाल लेवें.

किसस्टेशनसे	गिरीडीतक	ईसरीतक
	कामाड़ा	कामाड़ा.
कलकत्ता (हावरा)	२।≡)	२।=)।।।
भागलपुर (मंदारगिरि)	२)	२।।=)।।।
नाथनगर (चंपापुरी)	१।।।≡)	२।।=)
आसनसोल	१)	।।।=)
मोकामाघाट	१।।~)	२।)
बख्तारपुर (पावापुरी)	१।।।~)	२=)
दीघाघाट via बांकीपुर	२≡)	१।।।≡)
आरा	२।≡)	२≡)
मोगलसराय (काशी)	३।≡)	२।।~)
मिरजापुर	३।।।)।	२।।।≡)।।
मानिकपुर	४।।=)	३।।।≡)
	गीरीडीसे	ईसरीसे
कटनी	५।।)	४।।।)
जबलपुर	५।।।≡)	५।)
अलाहाबाद (प्रयाग)	४≡)	३।।)
कानपुर	५=)	४।≡)
फरुक्खाबाद	६।।=)	५।।।=)

आगराफोर्ट	६।≡)	५॥=)
अलीगढ़	६॥=)	५॥।≡)
हाथरस	६॥)	५॥।-)
गाजियाबाद	७≡)	६।≡)
दिल्ही	७।)	६॥-)
अंबाला	८॥।=)	८≡)
नलहटी	२≡)	२=)
आजिमगंज	२।-)	२≡)॥।
गयाजी	२।)	१।)

अन्य रेलवे लाईनका भाड़ा.

किस स्टेशनसे	कहांतक	भाड़ा.
आसनसोलसे	रांची	१।।।-)
गोमोहसे	भुवनेश्वर (खडगिरि)	४।)
,,	जगन्नाथपुरी	४।।।)
आसनसोल	भुवनेश्वर	४-)
कलकत्ता	भुवनेश्वर	३।≡)
आसनसोल	नागपुर	७=)
गोमोह	,,	७।-)
कलकत्तासे	,,	७।।।=)
दीघाघाट	छपरा	।।)
मोगलसराय	काशी	-)।।
,,	बनारस	=)
,,	लखनौ	२-)
,,	अयोध्या	१।।)
,,	सहारानपुर	४।।-)
,,	मुरादाबाद	३।।≡
अलहाबाद	लखनौ	१।।)
कानपूर	,,	।।≡)
आग्राफोर्ट	जैपुर	१।।-)
,,	बड़ोदा (नागदा उज्जैन)	५।≡)
,,	अहमदाबाद (Via बांदीकुई)	४।।।)
,,	अजमेर	२।=)
,,	कोटा (Via नागडा)	२।।)
,,	उज्जैन	४=)
,,	आबूरोड (Via बांदीकुई)	३।।।-)
,,	आनंद (Via नागडा या बांदीकुई)	५≡)
आग्राफोर्ट	सूरत Via नागदा	६।)

किस स्टेशनसे	कहांतक	भाड़ा.
दिल्ली	वड़ोदा Via वांदीकुई	५॥)
,,	अहमदाबाद ,,	४॥।)
,,	अहमदावाद Via नागदा मथुरा	७=)
,,	आनद Via वांदीकुई	५≡)
,,	वंवई Via नागडा वड़ोदा या अहमदावाद वांदीकुई	८-)
,,	चित्तौड़गढ़ Via अजमेर	३।)
,,	अजमेर	२।=)
,,	इन्दोर Via नागडा उज्जैन वा मथुरा	४॥।)
,,	मथुरा	२।=)
हाथरस	मथुरा	।-)
जवलपुर	वंवई	६॥≡)
,,	आमलनेर	४।-)
,,	नरसिंहपुर	॥≡)
,,	खंडवा	३)
आगरा	ग्वालियर	१)
,,	झासी	१॥≡)
कानपुर	झासी	१॥≡)
,,	ग्वालियर Via झासी	२।-)
जवलपुर	सोलापुर Via धौंड व मनमाड़	७॥।)
जवलपुर	पुना Via धौंड	७)
,,	नाशिक	५॥)
,,	धूलिया	४॥।≡)
कटनी	वीना	२)
,,	सागर	१॥)
,,	दमोह	॥।≡)
मानिकपुर	झासी	२=)
,,	वांदा	॥।-)

किस स्टेशनसे	कहांतक	भाड़ा.
नागपुर	बंबई	५॥।)
,,	आमलनेर	३।-)
,,	नाशिक	४॥)
,,	वरधा	॥=)
,,	अमरावती	१।≡)
,,	खडवा	३॥=)
,,	अकोला	१॥।≡)
,,	सोलापुर	६॥।)
,,	पूना	६)
,,	मनमाड़	४)
जबलपुर	मनमाड़	५)
मनमाड़	हैदराबाद	४≡)
मनमाड़	जालना	१।)
,,	सिकंदराबाद	४=)
दिल्ली	फीरोजपुर	२॥।-)
,,	लाहोर	३॥)
,,	मुलतान	५।-)
गाजिआबाद	मेरठ	॥)
दिल्ली	,,	॥।)
कलकत्ता	कटक	३≡)
बाल्टीअर	,,	३॥=)
,,	मद्रास	६।-)

श्रीजैनग्रन्थ उद्धारक कार्यालय चंदावाड़ी वम्बईका सूचीपत्र ।

खासकी छपाई हुई पुस्तकें ५ के मूल्यमें ६ भेजी जा सकती हैं ।

समयसार नाटक—स्वर्गीय कविवर वनारसीदासजीका नाम किसने न सुना होगा, उनकी कविता कैसी है इसका निर्णय करना हम पाठकोके ऊपरही छोड़ते हैं. यह ग्रथ १३६ पृष्टका चिकने कागजपर छपकर हालहीमे तैयार हुआ है । अध्यात्म प्रेमियोंको इसकी एक प्रति अवश्य मंगाकर देखना चाहिये । पाठशालाओंके संचालकोंसे निवेदन है, कि, वे विद्यार्थियोंको इसे कठ करावें । मूल्य आठ आना ।

जैनगीतावली—यह पुस्तक स्त्रीयोपयोगी है सो भी बुन्देलखण्ड प्रान्तके लिये अधिक उपयोगी होगी कारण इसके लेखक महाशय उसी प्रान्तके हैं । पुत्रोत्पत्ति, ज्योंनार, विवाह, मुण्डन, वन्दनादि सुअवसरोंपर गाने योग्य उत्तम २ धार्मिक गीतोका संग्रह है । थोड़ीसी प्रतियॉ शिलकमे हैं जल्दी मगाइये । दाम पाच आना ।

स्वर्गीय जीवन—एक अग्रेजी पुस्तकका अनुवाद है इसकी सरस्वतीमें हिन्दीके सम्राट पं. महावीरप्रशादजी द्विवेदीने मुक्तकठसे प्रशंसा की है । इसमे निम्नप्रकार विषय हैं ।

(१) विश्वका उत्कृष्ट तत्त्व, (२) मनुष्य जीवनका परमतत्व (३) जीवनकी पूर्णता शारीरिक आरोग्य और शक्ति (४) प्रेमका परिणाम (५) पूर्ण शातिकी सिद्धि (६) पूर्ण शक्तिकी प्राप्ति (७) सब पदार्थोंकी विपुलता–समृद्धिशाली होनेका नियम । (८) महात्मा सत और दूरदर्शी होनेके नियम । (९) सब धर्मोका असली तत्व–विश्वधर्म (१०) सर्व श्रेष्ठ धन प्राप्त करनेकी रीति ।.पृष्ठसख्या १६२ । मूल्य ग्यारह आना । सजिल्द ॥।=)

लघुअभिषेक—इसमे निम्नप्रकार विषय हैं । अधिकतर वीसपंथी भाइयोंके कामकी है भापा कुछ गुजराती तथा हिन्दी है ।

शास्त्रोके आधारसे लिखा है प्रत्येक श्रावकको इसे अपनेपास खरीद कर रखना चाहिये। मूल्य २।) रक्खा है। सुन्दर जिल्द बँधी है।

गोमट्टसार—यह भाषा टीका सहित छपा है इस ग्रंथकी प्रशंसा करनेकी जरूरत नहीं है। कीमत दो रुपया।

भगवती आराधना—यह ग्रथ खुले पत्रोंमे छपा है। पं सदासुखदासजी-कृत वचनिका सहित। इसमे शुद्ध निश्चय नयका वर्णन है। मूल्य चार रुपया।

जिनेन्द्र गुण गायन—गजल, कव्वाली, दादरा रेखता, ठुमरी, टप्पा, केहरवा, होली इत्यादि के ८१ भजन इसमे सग्रह किये हैं, सर्व ही नई तर्जके हैं। मूल्य दो आना।

जैन उपदेशी गायन—इसमें भी ऊपर की भाति ५३ भजनोंका संग्रह किया है। मूल्य अढ़ाई आना।

जैनार्णव—१०० पुस्तकोंका सग्रह। सफरमे इसे साथ रख लीजिये और अच्छे २ शास्त्रोका स्वाध्याय करते जाइये। मूल्य सादी १) सजिल्द १।)

श्रेणिक चरित्र—महाराज श्रेणिक राजा की कथा बड़ीही सुन्दर है। आज कलकी भाषामे संस्कृत परसे अनुवाद किया है। जिल्द बहुत बढ़िया बँधवाई गई है। मूल्य १।।।)

नाटक समयसार—भाषा टीका वचनिका खुले पत्रोंमे। मूल्य २।।)

भक्तामर कथा—यंत्र जत्र और साधनविधि सहित मूल्य सादी १) सजिल्द १।)

अष्टसहस्री—यह सस्कृत भाषामें है, अभी हालहीमें छप कर तैयार हुआ है। प्रत्येक मंदिरोंमें इसकी प्रति अवश्य रहना चाहिये। मूल्य २।।)

जैन सम्प्रदाय शिक्षा—यह ग्रंथ भी हिन्दी भाषामे है। प्रत्येक जैनीभाईको मगाना चाहिये। सजिल्दका मूल्य ३।।)

न्यायदीपका—हिन्दी भाषा टीका सहित सबके समझने योग्य। मूल्य।।।)

चर्चाशतक—द्यानतरायजीका बनाया हुआ है सरल हिन्दी भाषा टीका सहित। मूल्य ।।।)

धर्मसंग्रह श्रावकाचार—आचारका ग्रंथ है इसे अवश्य देखना चाहिये । मूल्य २)

पद्मनन्द पच्चीसी—यह बड़ा सुन्दर ग्रंथ है। मूल्य चार रुपया ।

स्याद्वादमजरी—इस ग्रंथमे स्याद्वादविषयके ऊपर वहुत विवेचना की है । हिन्दी भाषा टीका सहित छपकर तयार है। न्योछावर ४)

भाषा पूजा—इसमे सव पूजा तथा विसर्जन शांति पाठ आदि जो कुछ है सब भाषाहीमें है। न्यो० ।ǁ)

पंच मंगल—नया छपकर तयार हुआ है। विद्यार्थियोके वड़े कामकी चीज है। मूल्य तीन आने ।

महेन्द्र कुमार नाटक—के सपादक माननीय पं. अर्जुनलालजी सेठी बी. ए हैं आजतक जैनसमाजमें ऐसा सुन्दर नाटक तयार नहीं हुआ था। समाज सेठीजीके उच्च विचारोंसे तथा उनकी कार्यप्रणाली और नि स्वार्थ जाति सेवासे भलीभांति परिचित है । इसे मगाकर पढ़ना चाहिये और खेलना भी चाहिये । मूल्य आठ आना ।

प्रद्युम्नचरित्र भाषा वचनिका—इस ग्रंथमे श्रीकृष्ण नारायणके पुत्र प्रद्युम्नकुमारकी कथा वहुतही भावपूर्ण लिखी गई है। एकवार पढना शुरू कर दीजिये छोड़नेको जी नहीं चाहेगा। मूल्य २।ǁ)

नित्यनियम पूजा—(संस्कृत तथा भाषा)—तीसरीवार शुद्धता पूर्ण छपी है मूल्य चार आना ।

तत्त्वार्थ सूत्रकी वालबोधनी टीका—यह जैनियोंका प्रिय ग्रंथ है। छपाई वहुतही उत्तम है। मूल्य ।ǁ) वारा आना ।

जैनपद संग्रह—१ ला भाग (दौलतरामजी कृत) छह आना ।

जैनपद संग्रह—२ रा भाग (कविवर भागचंद्र कृत) मूल्य चार आना।

जैनपद संग्रह—५ वा भाग (कविवर वुधजनजी कृत) छह आना ।

सागरधर्मामृत—पंडित आशाधरजी कृत का प० लालारामजीने हिन्दी अनुवाद किया है। श्रावकाचार सम्बन्धी सर्व वातें भरी हुई हैं। मूल्य १।ǁ)